बहूभाषी मासिक अख़बार

RNI NO.: UPMUL/2023/90347

सदा-ए-बुलंद

हमारी क़लम इन्साफ़ तक...

शाहजहाँपुर से प्रकाशित

वर्ष :03 अंक: 5 06 शाहजहाँपुर से तीनों जुबाने हिन्दी, ऊर्दू, इंग्लिश एक साथ पहली बार शाहजहाँपुर नवम्बर 2025 पृष्ठ.8 मूल्य : 5 रूपये

इजराइल अपनी कायराना हरकत,और नरसंहार से बाज नहीं आ रहा है

अमेरिका ने कहा कि गाजा में संघर्ष विराम 'उम्मीदों से बढ़कर' है, जबकि इजरायल सहायता रोक रहा है

(आलम ए नजर –सदा ए बुलंद न्यूज) इजराइल पर दबाव बढ़ रहा है कि वह महत्वपूर्ण राफा सीमा पार को फिर से खोले ताकि भूख से जूझ रहे इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर आवश्यक मानवीय सहायता पहुँचाई जा सके, जैसा कि 11 दिन पहले हुए युद्धविराम समझौते में सहमति हुई थी। राष्ट्रपति ट्रंप ने हमास के खिलाफ अपनी धमकी दोहराई और कहा कि मध्य पूर्व के अनाम 'सहयोगी' इस बात पर सहमत हुए हैं कि अगर हमास युद्धविराम समझौते का उल्लंघन करता है तो वे गाजा में 'भारी बल' का इस्तेमाल करेंगे।

अमेरिकी दूत स्टीव विटकॉफ का कहना है कि फिलिस्तीनी क्षेत्र में घातक इजराइली हमलों के बावजूद, गाजा युद्धविराम उम्मीदों से 'अधिक' है, जहाँ पिछले एक दिन में अस्पतालों में 13 शव पहुँचे हैं।

समाचार एजेंसी अल–जज़ीरा के मुताबिक अक्टूबर 2023 से अब तक गाजा पर इजराइल के युद्ध में कम से कम 68,229 लोग मारे गए हैं और 170,369 घायल हुए हैं। 7 अक्टूबर, 2023 के हमलों के दौरान इजराइल में कुल 1,139 लोग मारे गए और लगभग 200 लोगों को बंदी बना लिया गया।ट्रम्प के इस दावे के बारे में अधिक जानकारी के लिए कि मध्य पूर्व के कई देशों ने हमास से लड़ने के लिए गाजा में सेना भेजने की पेशकश की है,और उन स्वयंसेवकों के बारे में जानने के लिए जिन्होंने गंभीर जोखिमों के बावजूद गाजा के नागरिक सुरक्षा दल में शामिल होने के लिए हस्ताक्षर किए हैं।

अमेरिका की मध्यस्थता से हुए युद्धविराम समझौते के तहत हमास ने गाजा से दो और इजराइली बंदियों के शव रिहा कर दिए हैं।

उपराष्ट्रपति जेडी वेंस सहित वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारियों ने बार–बार उल्लंघनों के बावजूद समझौते के कार्यान्वयन पर सकारात्मक रुख अपनाया है। इजराइल यात्रा के दौरान पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि अब तक चीजें उम्मीदों से कहीं ज्यादा बेहतर चल रही हैं। हमास ने गाजा और मिस्र के बीच महत्वपूर्ण राफा क्रॉसिंग को फिर से खोलने में इजराइल की विफलता की निंदा की है और कहा है कि इसके लगातार बंद रहने से घायल और बीमार फिलिस्तीनियों को चिकित्सा देखभाल और मानवीय सहायता मिलने में बाधा आ रही है।

इजराइली सैन्य और बसने वालों की हिंसा कब्जे वाले पश्चिमी तट पर जारी है, फिलिस्तीनी विदेश मंत्री वारसेन अगाबेकियन शाहीन ने इसे षविस्थापन और विनाश का एक व्यवस्थित अभियानष बताया है।

इजराइल के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, त्जाची हानेग्बी ने कहा कि गाजा पर इजराइल के युद्ध को लेकर दोनों देशों के बीच बढ़ते मतभेदों के कारण बेंजामिन नेतन्याहू ने उन्हें बर्खास्त कर दिया।

फोरेंसिक विशेषज्ञों ने वापस लौटे बंदियों के अवशेषों की पहचान शुरू की: इजराइली पुलिस का कहना है कि गाजा से वापस लौटे दो अपहृत लोगों के शव पहचान के लिए राष्ट्रीय फोरेंसिक चिकित्सा संस्थान को सौंप दिए गए हैं।पुलिस ने X पर एक पोस्ट में कहा, 'पुलिस फोरेंसिक अधिकारी और पुलिस दंत चिकित्सा इकाई के स्वयंसेवक, अतिरिक्त चिकित्सा और पहचान अधिकारियों के साथ, पहचान करने के लिए तैयार हैं।''

इजराइल के साथ युद्धविराम समझौते के तहत हमास ने अब 15 इजराइली बंदियों के शव सौंप दिए हैं। अनुमान है कि 13 और शव वापस आने की उम्मीद है।

फिलिस्तीनी समूह ने युद्धविराम की शुरुआत में ही एक दिन में 20 जीवित बंदियों को भी रिहा कर दिया। इस बीच, इजराइल घातक हमलों और कड़े सहायता प्रतिबंधों के साथ, समझौते का बार–बार उल्लंघन कर रहा है।

क्या गुजरात बीजेपी को नरेंद्र मोदी का वकल्प नहीं मिल पा रहा है?

(सदा ए बुलंद न्यूज) (कामरान अली, रिपोर्टर) भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के लिए गुजरात हमेशा से एक मजबूत गढ़ रहा है, और इस गढ़ की नींव में नरेंद्र मोदी का अहम योगदान रहा है। नरेंद्र मोदी ने 2001 से 2014 तक, यानी 12 साल से अधिक समय तक गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। इस दौरान उन्होंने न केवल राज्य में बीजेपी की स्थिति को मजबूत किया, बल्कि अपनी प्रशासनिक क्षमता और विकास के एजेंडे के दम पर राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई। लेकिन 2014 में उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद गुजरात की सियासत में एक शून्य सा महसूस होने लगा। पिछले 11 वर्षों में गुजरात ने तीन अलग–अलग मुख्यमंत्री देखे हैं, जो इस बात का संकेत देता है कि शायद बीजेपी को नरेंद्र मोदी जैसा कोई करिश्माई और स्थायी नेतृत्व अब तक नहीं मिल पाया है। 2014 में नरेंद्र मोदी के दिल्ली जाने के बाद आनंदीबेन पटेल, विजय रूपाणी और फिर भूपेंद्र पटेल ने गुजरात की कमान संभाली। यानी, जितने समय में नरेंद्र मोदी ने बतौर मुख्यमंत्री गुजरात में अपनी छाप छोड़ी, लगभग उतने ही समय में तीन नए चेहरे मुख्यमंत्री की कुर्सी पर आ चुके हैं। यह लगातार बदलाव बीजेपी के लिए एक चुनौती के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि गुजरात में पार्टी लगभग तीन दशकों से सत्ता पर काबिज है और उसकी साख को बनाए रखने के लिए स्थिर और प्रभावी नेतृत्व की जरूरत है। गुरुवार को एक नया घटनाक्रम सामने आया, जब मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने भले ही अपने पद से इस्तीफा नहीं दिया, लेकिन उनके मंत्रिमंडल के सभी 16 मंत्रियों ने अपने पद छोड़ दिए। यह कदम बीजेपी की उस रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है, जिसके तहत पार्टी कुछ सामाजिक और क्षेत्रीय वर्गों में अपनी नीतियों और नेतृत्व के प्रति बढ़ती नाराजगी को कम करने की कोशिश कर रही है। मंत्रिमंडल में इस फेरबदल को लेकर सियासी हलकों में चर्चा है कि बीजेपी गुजरात में अपनी पकड़ को और मजबूत करने के लिए नए चेहरों को मौका देना चाहती है, ताकि जनता के बीच ताजगी और विश्वास का संदेश जाए। लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या यह बार–बार के बदलाव और फेरबदल बीजेपी की उस ताकत को कमजोर कर रहे हैं, जो नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में गुजरात में देखने को मिली थी? नरेंद्र मोदी के मुख्यमंत्री काल में गुजरात ने न केवल आर्थिक विकास के मामले में तेजी देखी, बल्कि बीजेपी की संगठनात्मक ताकत भी अभूतपूर्व रूप से बढ़ी। उनकी कार्यशैली, जनता से सीधा संवाद और नीतिगत फैसलों ने उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में स्थापित किया, जिसका कोई विकल्प ढूंढना आसान नहीं है। हाल के वर्षों में गुजरात में बीजेपी को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। पाटीदार आंदोलन, दलित समुदाय की नाराजगी और कुछ अन्य सामाजिक समूहों में असंतोष ने पार्टी की राह को मुश्किल बनाया है। इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए बीजेपी ने समय–समय पर नेतृत्व और मंत्रिमंडल में बदलाव किए, लेकिन यह सवाल अब भी बना हुआ है कि क्या ये बदलाव पार्टी को उस स्थिरता और विश्वास की ओर ले जा रहे हैं, जो नरेंद्र मोदी के समय में देखने को मिली थी। भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में बीजेपी ने 2022 के विधानसभा चुनाव में शानदार जीत हासिल की थी, लेकिन मंत्रिमंडल के हालिया फेरबदल से यह संदेश गया है कि पार्टी अभी भी अपनी रणनीति को और पुख्ता करने में जुटी है। क्या यह फेरबदल जनता के बीच बीजेपी की छवि को नया रंग दे पाएगा, या फिर यह केवल एक अस्थायी उपाय साबित होगा? यह देखना दिलचस्प होगा कि गुजरात में बीजेपी का यह प्रयोग कितना सफल होता है। अंत में, यह कहना गलत नहीं होगा कि नरेंद्र मोदी का गुजरात में जो प्रभाव था, वह अब भी बीजेपी के लिए एक मापदंड बना हुआ है। उनके जैसा नेतृत्व और जनता से जुड़ाव दोहराना पार्टी के लिए एक बड़ी चुनौती है। क्या भूपेंद्र पटेल और उनकी नई टीम इस चुनौती को स्वीकार कर गुजरात में बीजेपी की साख को और मजबूत कर पाएंगे, या फिर पार्टी को नरेंद्र मोदी के विकल्प की तलाश में और इंतजार करना होगा? यह सवाल गुजरात की सियासत में आने वाले समय में और गहरा सकता है।

117 साल की बुजुर्ग महिला की इतनी उम्र का राज जानिए

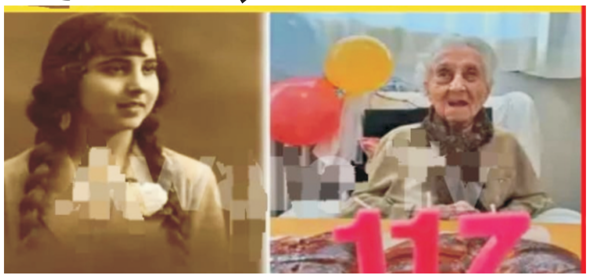

(सदा ए बुलंद न्यूज) स्पेन की मारिया ब्रान्यास मोरेरा का 117 वर्ष की आयु में निधन हो गया और वे दुनिया की सबसे वृद्ध महिलाओं में से एक बन गईं। उनके जीवन और डीएनए पर किए गए वैज्ञानिक अध्ययनों से कई महत्वपूर्ण तथ्य सामने आए हैं।उनकी कोशिकाएँ और डीएनए चयापचय उनकी वास्तविक आयु से लगभग 23 वर्ष कम पाए गए। उनके जीन में प्रतिरक्षा प्रणाली, हृदय और मस्तिष्क के स्वास्थ्य से जुड़े दुर्लभ उत्परिवर्तन थे। उनके पाचन तंत्र में लाभकारी बैक्टीरिया की उच्च मात्रा होती है, जो सूजन को कम करते हैं और पाचन में सुधार करते हैं। मारिया का आहार और जीवनशैली भी उनकी दीर्घायु में महत्वपूर्ण कारक थे:' भूमध्यसागरीय आहार (जैतून का तेल, ताजे फल और सब्जियाँ)

• नियमित पैदल चलना और शारीरिक गतिविधि
• शराब और धूम्रपान से परहेज
• मजबूत पारिवारिक और सामाजिक संबंध अधिक

कोराना वायरस से मर्दानगी की कमजोरी से पीड़ित रहेंगी नसले तक

(सदा ए बुलंद न्यूज) कोरोना महामारी के कुछ सालों बाद, वैज्ञानिकों की नजर इसके ऐसे असर पर पड़ी है जो काफी चौंकाने वाले हैं. अब एक नई रिसर्च सामने आई है जो बताती है कि यह वायरस न सिर्फ संक्रमित व्यक्ति को प्रभावित करता है, बल्कि उसके बच्चों यानी अगली पीढ़ी के मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार पर भी असर डाल सकता है और वह भी तब जब संक्रमण प्रेग्नेंसी से पहले हुआ हो. ऑस्ट्रेलिया के फ्लोरी इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस एंड मेंटल हेल्थ में किए गए एक अध्ययन में यह खुलासा हुआ है कि COVID19 संक्रमण पुरुषों के शुक्राणुओं में ऐसे बदलाव ला सकता है, जो बच्चे के दिमाग के विकास और व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं.

संपादक की कलम से... | बहार मोहम्मद उर्फ शेख़ मौलाना शाही बहार-ए-आलम कादरी रिज़वी

सीजफायर के बावजूद भी इजराइल गाजा में हमले तेज करके फिलिस्तीनियों को दर्दनाक हत्याएं कर रहा है

(आलम ए नजर – सदा ए बुलंद न्यूज) गाजा पट्टी पर इजराइल का खूनी हमला जारी है। शुक्रवार को 51 से ज्यादा फिलिस्तीनी मारे गए और दर्जनों घायल हो गए। बचाव दल मलबे में दबे लोगों को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कहना है कि गाजा में युद्ध समाप्त करने और बंदियों की रिहाई सुनिश्चित करने के लिए समझौता जल्द ही होने वाला है।

इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने संयुक्त राष्ट्र को बताया कि बढ़ते अंतरराष्ट्रीय अलगाव, युद्ध अपराधों के आरोपों और युद्ध समाप्त करने के बढ़ते दबाव के बावजूद, उनका देश गाजा पर अपना विनाशकारी युद्ध जारी रखेगा। अक्टूबर 2023 से अब तक गाजा पर इजराइल के युद्ध में कम से कम 65,549 लोग मारे गए हैं और 167,518 घायल हुए हैं। माना जाता है कि मलबे के नीचे हजारों और लोग दबे हुए हैं। 7 अक्टूबर, 2023 के हमलों के दौरान इजराइल में कुल 1,139 लोग मारे गए थे और लगभग 200 बंदी बनाए गए थे।150 व्यवसायों का संयुक्त राष्ट्र डेटाबेस में पश्चिमी तट पर अवैध बस्तियों से संबंध

संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार कार्यालय द्वारा जारी एक रिपोर्ट (पीडीएफ) में 150 से अधिक व्यवसायों को सूचीबद्ध किया गया है जिनका संबंध कब्जे वाले पश्चिमी तट पर अवैध इजराइली बस्तियों से है, जो 2023 में प्रकाशित होने वाली पिछली रिपोर्ट से 68 अधिक है।

रिपोर्ट में कहा गया है, ष्जहाँ व्यावसायिक उद्यमों को पता चलता है कि उन्होंने मानवाधिकारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है या इसमें योगदान दिया है, उन्हें उचित प्रक्रियाओं के माध्यम से सुधार के लिए प्रावधान करना चाहिए या सहयोग करना चाहिए।ष

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख वोल्कर तुर्क ने कहा, ष्यह रिपोर्ट संघर्ष के संदर्भ में काम करने वाले व्यवसायों की उचित परिश्रम की जिम्मेदारी को रेखांकित करती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनकी गतिविधियाँ मानवाधिकारों के हनन में योगदान न दें।'डेटाबेस में एक नई कंपनी, जर्मन सीमेंट निर्माता हीडलबर्ग मैटेरियल्स ने इस सूची पर विवाद किया और रॉयटर्स को बताया कि वह अब पश्चिमी तट पर सक्रिय नहीं है। 2023 के संस्करण में मौजूद होने के बावजूद, ईड्रीम्स और ओपोडो जैसी ट्रैवल कंपनियों को सूची से हटा दिया गया है।

फिलिस्तीनी पश्चिमी तट पर कब्जा अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत अवैध है, और अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने जुलाई 2024 में कहा था कि इजराइल को पश्चिमी तट और पूर्वी यरुशलम से बसने वालों को हटाना चाहिए और फिलिस्तीनियों को मुआवजा देना चाहिए। इजराइल श्गाजा की आबादी कम करने की योजना पर आगे बढ़ रहा हैश

हानी महमूद द्वारा मध्य गाजा के नुसेरात से रिपोर्टिंग के मुताबिक गाजा के चारों ओर लगे और नेतन्याहू के भाषण का प्रसारण करने वाले इजराइल के लाउडस्पीकर बंदियों के लिए थे। लेकिन गाजा शहर में फंसे फिलिस्तीनियों के लिए, इजराइल के बम गिरना बंद नहीं हुए। भाषण के दौरान, कई धमाके हुए, जिन्हें हम जहाँ रिपोर्ट कर रहे हैं, वहाँ से सुना जा सकता था। वह लगभग 15 किमी (सात मील) दूर है। आसमान में काला धुआँ उठ रहा है।लगभग एक–चौथाई भाषण के बाद, फिलिस्तीनियों ने नेतन्याहू का भाषण सुनना छोड़ दिया क्योंकि उन्होंने इस नरसंहार पर वे जो सुनना चाहते थे, वह नहीं कहा। उन्होंने चल रहे सामूहिक विस्थापन, जबरन निर्जलीकरण और भुखमरी, और एक पूरे शहर पर बमबारी और विनाश का जिक्र तक नहीं किया।

इस भाषण को व्यापक रूप से जमीन पर इजराइल के नरसंहारी कृत्यों को उचित ठहराने, या आने वाले दिनों में ऐसे और भी कृत्यों को बढ़ावा देने के रूप में देखा गया, क्योंकि इजराइली सेना गाजा शहर में और गहराई तक घुसकर उसे घेर रही है।वे गाजा की आबादी कम करने की योजना पर आगे बढ़ रहे हैं।शुक्रवार की सुबह से अब तक इजराइल ने गाजा में 51 लोगों को मार डाला है यह जानकारी गाजा के अस्पतालों के चिकित्सा सूत्रों ने अल जजीरा से बात करते हुए दी है। मृतकों में गाजा शहर के 30 लोग शामिल हैं।

गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताई मरने वालों की संख्याः गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय ने इजराइल के युद्ध में मरने वालों की आधिकारिक संख्या 65,549 बताई है यह संख्या 7 अक्टूबर, 2023 को युद्ध शुरू होने के बाद से है। मंत्रालय ने आगे बताया कि 167,518 लोग घायल हुए हैं।

आपका स्वागत नहीं है': गाजा पर इजराइल के युद्ध के लिए अमेरिकी प्रशासन के अटूट समर्थन के बावजूद, 84 प्रतिशत से ज्यादा अमेरिकी युद्धविराम का समर्थन करते हैं। फिलिस्तीन समर्थक प्रदर्शनकारी न्यूयॉर्क की सड़कों पर उतरेः यह भावना न्यूयॉर्क शहर के टाइम्स स्क्वायर में भी दिखाई दी, जहाँ प्रदर्शनकारियों की एक विशाल भीड़ बेंजामिन नेतन्याहू के विरोध में सड़कों पर उतर आई।

फिलिस्तीनी युवा आंदोलन के सदस्य नास इस्सा ने कहा कि यह प्रदर्शन इजराइली प्रधानमंत्री को एक संदेश देना चाहता हैरू ष्उनका न्यूयॉर्क शहर में स्वागत नहीं है और यह अमानवीय है कि निर्वाचित अधिकारी... उनके लिए लाल कालीन बिछा रहे हैं।'इस्सा ने अल जजीरा को बताया, ष्हम फिलिस्तीनी और अरब यहूदियों का एक अंतरराष्ट्रीय समूह हैं जो अपनी मातृभूमि की मुक्ति और इस नरसंहार के अंत के लिए लड़ रहे हैं, और हम हजारों न्यूयॉर्कवासियों से घिरे हुए हैं जो हमारे साथ इस संघर्ष में शामिल हैं और यहाँ हथियार प्रतिबंध की माँग करने और फिलिस्तीनियों के ख़िलाफ इजराइल के नरसंहार के लिए वास्तविक परिणामों की माँग करने आए हैं।'

दीपावली की खुशियों के बीच इस बार कई घरों में सन्नाटा पसर गया

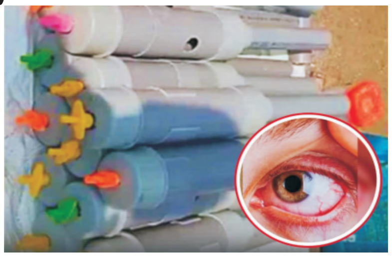

(सदा ए बुलंद न्यूज) वजह है इंस्टाग्राम पर वायरल एक "फन ट्रेंड", जो कई बच्चों का जीवन अंधेरे में ढकेल गया। देसी जुगाड़ से बनी कार्बाइड गन अब पूरे प्रदेश में कहर बरपा रही है। भोपाल, विदिशा, ग्वालियर और इंदौर में 200 से अधिक बच्चे घायल होकर अस्पताल पहुंच चुके हैं। कई की आंखों की रोशनी स्थायी रूप से जा चुकी है, कुछ के चेहरे झुलस गए।

दीपावली से 15–20 दिन पहले जब देश पटाखा जलाने और उससे होने वाले प्रदूषण के नुकसान के बीच बहस में उलझा था, इंस्टाग्राम और यूट्यूब की रील में पीवीसी पाइप से बनी एक पटाखा गन को कूल अंदाज में प्रोत्साहित किया जा रहा था। कंटेंट बनाने वाले इसे ग्रीन पटाखा बता रहे थे। उसी बीच शहर के अलग–अलग हिस्सों में कुछ लोगों ने सड़क किनारे चादर बिछाकर इसकी दुकानें लगाईं। वे पानी से भरे पाइप में कार्बाइड डालते, पत्थर के टुकड़े डालते, हिलाते और पत्थर निकाल लेते। उसके बाद लाइटर का बटन दबाते उसमें धमाका होता।

मिजाइल मैंन ए पी जे अब्दुल कलाम की उत्साह के साथ जयंती मनाई गई

(शाहजहांपुर / सदा ए बुलंद न्यूज) मदरसा नुरुल हुदा बिजली पूरा में भारत के पूर्व राष्ट्रपति, महान वैज्ञानिक और मिसाइल मैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जयंती बड़े ही उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाई गई। इस अवसर पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उनकी प्रेरणादायक जीवन यात्रा पर विचार साझा किए। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित काजी मोहम्मद आमिर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि डॉ. अब्दुल कलाम का जीवन हर युवा के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि डॉ. कलाम ने कठिन परिस्थितियों में भी शिक्षा को अपना हथियार बनाया और देश को विज्ञान के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे भी ईमानदारी, मेहनत और लगन से अपने लक्ष्य की प्राप्ति करें।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित काजी मोहम्मद आमिर ने

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि डॉ. अब्दुल कलाम का जीवन हर युवा के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि डॉ. कलाम ने कठिन परिस्थितियों में भी शिक्षा को अपना हथियार बनाया और देश को विज्ञान के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे भी ईमानदारी, मेहनत और लगन से अपने लक्ष्य की प्राप्ति करें।इस मौके पर शिक्षकों ने भी अपने विचार रखे। छात्र–छात्राओं ने डॉ. कलाम के जीवन पर आधारित कविताएँ और भाषण प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक साजिद अली खान ने किया और अंत में सभी ने डॉ. कलाम के सपनों के भारत को साकार करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में इजहार हसन, जहूर अहमद, मोहम्मद जाहिद, सुबूही, साजिद अली, कामरान हुसैन, मोईन खान, शारिक अली खान, शारिक अली,बड़ी संख्या में छात्र, अभिभावक और गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

ऐसे डाक्टर सभी बन जाएं तो कोई भी बिमारी से तबाह न हो

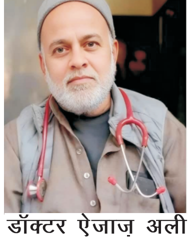

डॉक्टर ऐजाज़ अली

(सदा ए बुलंद न्यूज) पटना के मशहूर डॉक्टर एजाज अली आज भी सिर्फ 10 रुपये फीस में गरीब और जरूरतमंद मरीजों का इलाज करते हैं। उनका यह अंदाज–ए–ख़िदमत (सेवा भाव) आज के दौर में इंसानियत और कुर्बानी की सबसे ख़ूबसूरत मिसाल है। वो एक सीनियर गैस्ट्रोएंटरोलॉजिस्ट हैं, जिन्होंने अपनी जिंदगी गरीबों की सेवा के नाम कर दी है। पटना में उनका क्लिनिक आम लोगों के लिए खुला रहता है कृजहाँ वो सिर्फ 10 रुपये की फीस लेकर इलाज करते हैं, और कई बार अगर मरीज की हालत या हालत–ए–माली (आर्थिक स्थिति) ठीक न हो, तो दवाइयाँ भी अपने तरफ से देते हैं। उनकी ख़िदमत ख़ास बन जाती है क्योंकि मरीजों के साथ रहमदिली और इंसानियत से पेश आते हैं। जहाँ आज इलाज की क़ीमतें आसमान छू रही हैं, वहाँ सिर्फ 10 रुपये फीस में परामर्श।बहुत से मरीजों के लिए वो किसी फरिश्ते से कम नहीं। एजाज अली जैसे लोग समाज के वो रोशन सितारे हैं, जो हमें सिखाते हैं कि डॉक्टरी सिर्फ पेशा नहीं एक इबादत है।

शाहजहांपुर में चाइनीज मांझे का खूनी खेल जारी है कबतक सिर कटते रहेंगे, प्रशासन संज्ञान ले

(शाहजहांपुर / सदा ए बुलंद न्यूज) भैया दूज पर पत्नी के सामने उजड़ा सुहाग, प्रशासन की नींद नहीं खुली!शाहजहांपुर रोजा थाना क्षेत्र में चाइनीज मांझे ने फिर दिखाया अपना खौफनाक चेहरा! 25 साल के रवि शर्मा की गर्दन कटने से दर्दनाक मौत ने पूरे शहर को हिलाकर रख दिया। भैया दूज के दिन पत्नी मोनी के साथ ससुराल जा रहे रवि का सुहाग इस खतरनाक मांझे ने छीन लिया। पत्नी की चीखें गूंजीं, राहगीर दौड़े, मगर रवि की सांसें हमेशा के लिए थम चुकी थीं।पुलिस ने शव पोस्टमॉर्टम को भेजा, लेकिन सवाल वहीरू प्रशासन क्यों है बेखबर? चाइनीज मांझे पर

पाबंदी के दावों की पोल खुल गई! बाजारों में धड़ल्ले से बिक रहा यह कातिल मांझा एक के बाद एक जिंदगियां लील रहा है। कुछ महीने पहले अजीजगंज में सिपाही की मौत ने भी प्रशासन को झकझोरा था, मगर छापेमारी का नाटक कुछ दिन चला और फिर सब ठंडे बस्ते में। स्थानीय लोग गुस्से में, सवाल बेकरार "आखिर यह खतरनाक मांझा आता कहां से है? प्रशासन क्यों हाथ पर हाथ धरे बैठा है?" गुस्साए लोगों का कहना है कि हादसों के बाद दो–चार दिन की सख्ती के बाद सब कुछ भुला दिया जाता है। एक और घर उजड़ा, कब जागेगा प्रशासन?रवि की मौत ने न सिर्फ एक परिवार को तोड़ा, बल्कि जिला प्रशासन की नाकामी को फिर उजागर किया। आखिर कब तक चाइनीज मांझा यूं ही खून की होली खेलेगा? कब तक मासूम जिंदगियां यूं बुझती रहेंगी? तस्वीर इतनी खौफनाक थी कि उसे ब्लर करना पड़ा।

बहुभाषी मासिक अख़बार **सदा ए बुलंद** صدائے بلند शाहजहाँपुर नवम्बर 2025(3)

क़ानूनी सलाह

अगर आपकी पत्नी का प्रेमी है और आप बहुत परेशान हैं तो आप ये कानून अपनाएं

(सदा ए बुलंद न्यूज) पत्नी के प्रेमी से संबंध होने पर, इसे कानूनी रूप से तलाक का आधार बनाया जा सकता है और आप प्रेमी के खिलाफ अन्य कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं। 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने व्यभिचार को भारतीय दंड संहिता के तहत अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया था, लेकिन इसे अभी भी तलाक के लिए एक वैध आधार माना जाता है। इसके अलावा, आप प्रेमी के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 498 के तहत आपराधिक इरादे से फुसलाने का मामला भी दर्ज कर सकते हैं।

कानूनी विकल्प तलाक: यदि आपको अपनी पत्नी के व्यभिचार के कारण तलाक चाहिए, तो आप व्यभिचार को आधार बनाकर तलाक का मुकदमा दायर कर सकते हैं। इसमें प्रेमी को दूसरे प्रतिवादी के रूप में शामिल किया जा सकता है।

आपराधिक शिकायत:आप पत्नी के प्रेमी के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 498 के तहत ष्आपराधिक इरादे से फुसलाना, ले जाना या हिरासत में रखनाष् का मामला दर्ज कर सकते हैं। भरण–पोषण और मानसिक उत्पीड़न रू आप तलाक के साथ–साथ भरण–पोषण और मानसिक उत्पीड़न के आधार पर भी कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण जानकारी

व्यभिचार अब अपराध नहीं: सुप्रीम कोर्ट ने 2018 में व्यभिचार (व्यभिचार के लिए भारतीय दंड संहिता की धारा 497) को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया था, क्योंकि यह लैंगिक भेदभावपूर्ण था।

तलाक का आधार: व्यभिचार को अभी भी हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 13(1) (i)के तहत तलाक के लिए एक वैध आधार माना जाता है। महिला के खिलाफ कार्रवाईरू व्यभिचार के अपराध से मुक्त होने के बावजूद, आपकी पत्नी के खिलाफ तलाक के मामले में कार्रवाई की जा सकती है।

जब पत्नी का प्रेमी या पति की प्रेमिका जीवन आती है तो ये लक्षण होते हैं:किसी के अवैध संबंध के बारे में संदेह होने पर कुछ संकेत हो सकते हैंरू व्यवहार में अचानक बदलाव, जैसे गुस्सा या दूरी बनाना,

फोन या सोशल मीडिया को लेकर गोपनीयता बढ़ना, और बार–बार घर से बाहर रहना। इसके अलावा, शारीरिक संबंधों में कमी, अपनी शक्ल–सूरत पर अचानक ज्यादा ध्यान देना और झूठ बोलना या सवालों को टालना भी ऐसे लक्षण हो सकते हैं।

व्यवहार में बदलाव: दूरियां बनाना: आपका साथी आपसे भावनात्मक या शारीरिक रूप से दूर हो सकता है।

गुस्सा या चिड़चिड़ापन:वे छोटी–छोटी बातों पर गुस्सा हो सकते हैं या चिड़चिड़े हो सकते हैं। **रहस्यमयी व्यवहार :** वे अचानक गुप्त या रहस्यमयी हो सकते हैं और सवालों के गोल–मोल जवाब दे सकते हैं। **कम रुचि:** वे परिवार और रिश्तों में कम रुचि दिखा सकते हैं, और खुद को खोया हुआ या ख्यालों में खोया हुआ महसूस कर सकते हैं।

संचार और फोन का इस्तेमाल:

फोन छुपाना: वे अपना फोन छिपा कर रख सकते हैं,पासवर्ड बदल सकते हैं, या कॉल/मैसेज को छुपा सकते हैं। **अकेले में बात करना :** वे फोन पर बात करने के लिए घर से बाहर या अकेले में जाना पसंद कर सकते हैं।

फोन का जवाब न देना: कॉल आने पर वे हमेशा जवाब नहीं दे सकते हैं।

दिनचर्या और आदतों में बदलाव:

बार–बार बाहर जाना : वे अचानक से ज्यादा बार और देर तक घर से बाहर रहने लगे सकते हैं, अक्सर किसी बहाने से। **अपनी शक्ल–सूरत पर ध्यान देना:**वे अपनी शक्ल–सूरत, कपड़ों और ग्रूमिंग पर अचानक ज्यादा ध्यान दे सकते हैं। **सोशल मीडिया पर बदलाव:**वे अपने सोशल मीडिया पर पारिवारिक तस्वीरें पोस्ट करना बंद कर सकते हैं या अपनी गोपनीयता बढ़ा सकते हैं।

आर्थिक बदलाव रू अचानक से ज्यादा पैसे खर्च करना या गिफ्ट्स मिलने जैसे संकेत भी हो सकते हैं। **महत्वपूर्ण:** ये सभी संकेत केवल संदेह पैदा कर सकते हैं और अवैध संबंध का निश्चित प्रमाण नहीं होते हैं। किसी भी नतीजे पर पहुँचने से पहले, अपने साथी के साथ खुलकर बातचीत करने और रिश्ते में आए बदलावों पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

पति-पत्नी घरेलू झगड़ों पर कानूनी सटिक सलाह

(सदा ए बुलंद न्यूज) पति के लिए कानूनी प्रावधान झूठे आरोपों पर मानहानि का मुकदमा: यदि पत्नी झूठे आरोप लगाकर पति की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाती है, तो पति पत्नी के खिलाफ मानहानि का मुकदमा कर सकता है। सेक्शन 9 (Section 9) पति अपनी पत्नी को वापस लाने के लिए फैमिली कोर्ट में सेक्शन 9 का केस कर सकता है, खासकर अगर वह झगड़ा करके मायके चली गई हो और वापस आने से मना कर रही हो।

कानूनी सुरक्षा:कुछ मामलों में, जैसे पत्नी द्वारा झूठे आरोप लगाना या कानून का दुरुपयोग करना, पति भारतीय दंड संहिता (IPC) और अन्य कानूनों के तहत कार्रवाई कर सकता है।

महत्वपूर्ण कानूनी सिद्धांत:

कानून का दुरुपयोग: झूठे या बढ़ा–चढ़ाकर किए गए आरोप कानून का दुरुपयोग माने जाते हैं, जिससे तुरंत गिरफ्तारी, प्रतिष्ठा की हानि और लंबी कानूनी लड़ाई हो सकती है।

तलाक के आधाररू क्रूरता, धर्म परिवर्तन, मानसिक बीमारी, कुष्ठ रोग और सात साल से अधिक समय तक बात न होना जैसे कारण तलाक के आधार हो सकते हैं।

संतुलित दृष्टिकोण: कानूनी प्रावधान दोनों पति–पत्नी के साथ उचित व्यवहार का समर्थन करते हैं।आर्थिक क्षमतारू मुस्लिम पर्सनल लॉ में भरण–पोषण की रकम पति की आर्थिक क्षमता और पत्नी व बच्चों की जरूरतों पर निर्भर करती है।

पति–पत्नी की लड़ाई में कौन सी धारा लगती है? पति–पत्नी के झगड़े में आईपीसी धारा 498A घरेलू हिंसा) सबसे आम है, लेकिन झगड़े की प्रकृति के आधार पर अन्य धाराएँ भी लग सकती हैं। यदि पत्नी को चोट लगी है तो आईपीसी धारा 323 (चोट पहुँचाना), या झूठे सबूत पेश करने पर आईपीसी धारा 191 (झूठे सबूत पेश करना) जैसी धाराएं भी लग सकती हैं। यदि झगड़े से शांति भंग होने की आशंका हो, तो पुलिस धारा 107 और 116 के तहत बाउंड ओवर कर सकती है।

सामान्य धाराएँ:

धारा 498 A पति या उसके रिश्तेदारों द्वारा पत्नी को क्रूरता या दहेज उत्पीड़न के मामलों में यह धारा लगाई जाती है।

धारा 323: अगर झगड़े में किसी पक्ष को चोट पहुँचती है, तो यह धारा (चोट पहुँचाने) लग सकती है।धारा 191: यदि कोई पति या पत्नी अदालत में झूठे सबूत पेश करता है, तो यह धारा लागू हो सकती है। धारा 107:और 116: यदि शांति भंग होने की आशंका हो, तो पुलिस शांति बनाए रखने के लिए इन धाराओं के तहत बाउंड ओवर कर सकती है।

अन्य संबंधित कानून।

हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 9: यदि पत्नी बिना किसी ठोस वजह के घर छोड़ देती है, तो पति इस धारा के तहत जिला अदालत में याचिका दायर कर पत्नी को वापस घर लाने का आदेश मांग सकता है।

सवाल– क्या मैं अपनी पत्नी के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर कर सकता हूं?

जवाब – इसका सीधा उत्तर है रू हां, यदि आपकी पत्नी आपके विरुद्ध झूठे आरोप लगाती है, जिससे आपकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचता है, तो आप उसके विरुद्ध मानहानि का मुकदमा दायर कर सकते हैं, बशर्ते आप यह साबित कर सकें कि आरोप झूठे, दुर्भावनापूर्ण तथा बिना किसी वैध औचित्य के हैं।

अगर पत्नी झूठा आरोप लगाए तो क्या करें ?अगर आपकी पत्नी आप पर झूठा आरोप लगाती है, तो आपको सबसे पहले एक वकील से संपर्क करना चाहिए। साथ ही, सबूत इकट्ठा करें और शांत रहें। कानूनी कार्रवाई के तहत, आप धारा 482 सीआरपीसी के तहत उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर सकते हैं या मानहानि का मुकदमा कर सकते हैं।

तत्काल कदम:

वकील से संपर्क करें रू एक अनुभवी वकील (जैसे घरेलू हिंसा और पारिवारिक कानून में) से तुरंत संपर्क करें जो आपकी स्थिति के अनुसार कानूनी सलाह दे सके। सबूत इकट्ठा करेंरू अपने बचाव के लिए सभी सबूत (जैसे मैसेज, रिकॉर्डिंग, गवाह, रसीदें) सुरक्षित करें और अपने वकील को दें। शांत रहें: पुलिस या कोर्ट में कोई भी बयान देने से पहले कानूनी

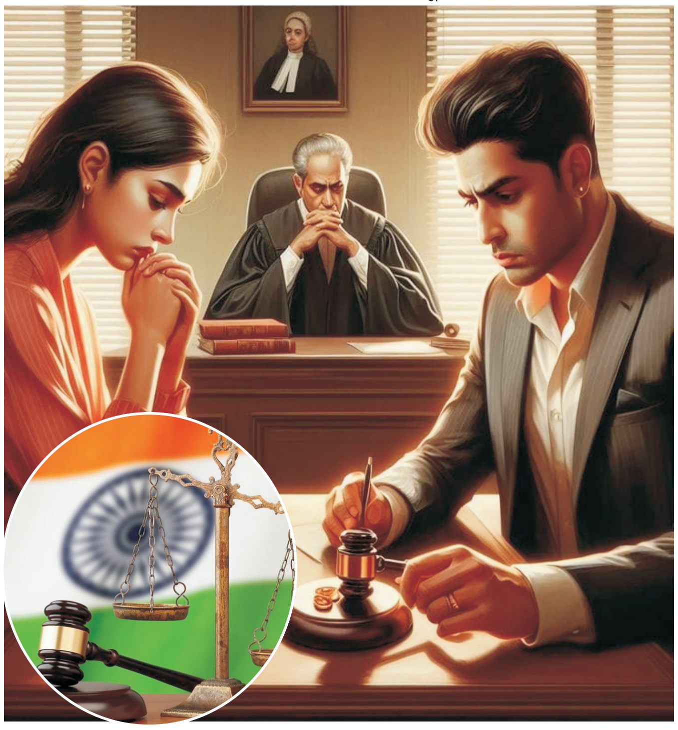

सलाह लें। कुछ भी ऐसा न कहें जिससे आप पर नकारात्मक असर पड़े।

अग्रिम जमानत के लिए आवेदन करें:यदि आपको गिरफ्तारी का डर है, तो सत्र न्यायालय या उच्च न्यायालय में अग्रिम जमानत के लिए धारा 438 सीआरपीसी के तहत आवेदन करें। कानूनी विकल्प।

धारा 482 सीआरपीसी के तहत याचिका: यदि आपके पास ठोस सबूत हैं, तो आप उच्च न्यायालय में धारा 482 के तहत याचिका दायर कर सकते हैं, ताकि झूठे आरोपों को खारिज किया जा सके।

498A मामले को खारिज करने के लिए आवेदन : यदि पत्नी ने धारा 498A के तहत शिकायत दर्ज की है और आपके पास पर्याप्त सबूत हैं कि आरोप झूठे हैं, तो आप न्यायाधीश के सामने इसे खारिज करने का आवेदन कर सकते हैं। **मानहानि का मुकदमा:**यदि आरोप झूठे और मानहानिकारक हैं, तो आप भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 500 के तहत मानहानि का मुकदमा दायर कर सकते हैं।

धारा 182 के तहत शिकायत :यदि आरोप पूरी तरह से झूठे हैं और पुलिस को गुमराह करने के लिए लगाए गए हैं, तो आप धारा 182 IPC के तहत पलटकर शिकायत दर्ज कर सकते हैं।

गलत साक्ष्य देने के खिलाफ शिकायत: आप सीआरपीसी की धारा 340 के तहत अदालत में झूठी गवाही की शिकायत दर्ज कर सकते हैं।

अन्य उपाय:

रिश्ता सुधारने की कोशिश करें: यदि आप शादी को बचाना चाहते हैं, तो आप हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 9 के तहत वैवाहिक अधिकारों की बहाली के लिए याचिका दायर करने पर विचार कर सकते हैं। **धमकी और दबाव की शिकायत:** यदि आपकी पत्नी आपको झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी दे रही है, तो आप महिला आयोग या मेडिएशन सेल में शिकायत कर सकते हैं।

अगर पत्नी परेशान करे तो क्या करना चाहिए?अगर पत्नी परेशान कर रही है तो शांति से बातचीत करें और समस्याओं को समझने की कोशिश करें। पत्नी के मायके वालों से बात करें और अपनी शिकायतें शान्ति से रखें। अगर समस्या बातचीत से हल नहीं होती है, तो आप कानूनी मदद ले सकते हैं, जैसे पुलिस में शिकायत दर्ज कराना या एसडीएम कोर्ट का सहारा लेना। बातचीत और सुलह समझौता केन्द्र की मदद जरुर लें। **नाराजगी का कारण जानें:** सबसे पहले यह जानने की कोशिश करें कि वह क्यों परेशान है। हो सकता है कि इसमें आपकी कोई गलती हो। **धैर्य से सुनें:** उसे अपनी बात कहने का मौका दें और ध्यान से सुनें। उसकी बातों को समझने की कोशिश करें। **साथ में समाधान खोजें:** दोनों मिलकर समस्या का हल निकालने का प्रयास करें। **एक–दूसरे को समय दें:** कभी–कभी साथ में समय बिताने या उसे आराम देने से भी माहौल बेहतर हो सकता है।

कानूनी और अन्य मदद:

पुलिस की मदद: अगर पत्नी मारपीट या शारीरिक शोषण कर रही है, तो आप तुरंत पुलिस (100 नंबर या महिला हेल्पलाइन 1091) की मदद ले सकते हैं। **थाने में शिकायत:** आप पत्नी के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज करा सकते हैं, खासकर अगर वह गाली–गलौज, मारपीट या धमकी दे रही है। **SDM कोर्ट:** आप एसडीएम कोर्ट में भी शिकायत दर्ज करा सकते हैं और उसके खिलाफ नोटिस जारी करवा सकते हैं।

कानूनी सलाहकार: अगर मामला गंभीर है, तो आप किसी वकील से सलाह ले सकते हैं।

दूसरों से सलाह लें: अगर आप खुद से समस्या को हल नहीं कर पा रहे हैं, तो किसी भरोसेमंद दोस्त या परिवार के किसी सदस्य से बात कर सकते हैं या किसी विशेषज्ञ की मदद ले सकते हैं।

एक नज़र में

डा0 रमाकांत का निधन

(सदा ए बुलंद न्यूज) शाहजहांपुर के वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ डॉ रमाकांत का निधन हो गया। शनिवार को चेस्ट पेन होने पर उनको अपोलो लखनऊ ले जाया गया था। वहां बाईपास होनी थी। सोमवार सुबह तक हालत स्थिर थी। अचानक प्रातः नौ बजे के करीब उनकी हालत बिगड़ गई। तमाम प्रयास के बाद भी उनको बचाया न जा सका'

महिला के जुड़वां बच्चे पैदा हुए दोनों के बाप अलग-अलग

(आलम ए नजर –सदा ए बुलंद न्यूज) पुर्तगाल में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। गोयस राज्य के मिनेरोस शहर की 19 वर्षीय महिला ने जुड़वा बच्चों को जन्म दिया, लेकिन दोनों बच्चों के ि प त ा अलग–अलग निकले। जांच में खुलासा हुआ कि एक बच्चे का डीएनए एक पुरुष से और दूसरे का डीएनए दूसरे पुरुष से मैच हुआ। जांच के बाद महिला ने बताया कि उसने एक ही दिन दो पुरुषों से संबंध बनाए थे। डॉक्टरों के अनुसार, ऐसा दुर्लभ मामला 'सुपरफेकुंडेशन' कहलाता है, जिसमें महिला के अंडाणु एक ही दिन अलग–अलग पुरुषों के शुक्राणुओं से फर्टिलाइज हो जाते हैं।

अपने रब की किन किन नियामतों को ठुकराओगे

(सदा ए बुलंद न्यूज) सऊदी अरब में 78 साल के एक बुजुर्ग को थकान की वजह से अचानक बेहोश होने पर प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों ने उन्हें 24 घंटे तक ऑक्सीजन पर रखा — अल्हमदुलिल्लाह वो जल्द ही ठीक हो गए। जब डॉक्टर ने उन्हे SR 2,000 का बिल दिया तो वो बुजुर्ग रोने लगे... डॉक्टर ने नरमी से कहा आप परेशान मत होइए मैं खुद ये बिल भर दूँगा। बुजुर्ग बोले मैं बिल देखकर नहीं रो रहा हूँ मैं तो इसे आसानी से चुका सकता हूँ।

मैं इसलिए रो रहा हूँ क्योंकि आज मुझे एहसास हुआ कि मैं 78 साल से अल्लाह की हवा में साँस ले रहा हूँ और कभी एक रियाल भी नहीं चुकाया... अगर 24 घंटे की ऑक्सीजन का खर्च SR 2,000 है तो पूरी जिंदगी के लिए मैं अल्लाह का कितना कर्जदार हूँ? डॉक्टर की आँखों से भी आँसू निकल पड़े।

दीपावली की खुशियों के बीच इस बार कई घरों में सन्नाटा पसर गया

(सदा ए बुलंद न्यूज) वजह है इंस्टाग्राम पर वायरल एक "फन ट्रेंड", जो कई बच्चों का जीवन अंधेरे में ढकेल गया। देसी जुगाड़ से बनी कार्बाइड गन अब पूरे प्रदेश में कहर बरपा रही है। भोपाल, विदिशा, ग्वालियर और इंदौर में 200 से अधिक बच्चे घायल होकर अस्पताल पहुंच चुके हैं। कई की आंखों की रोशनी स्थायी रूप से जा चुकी है, कुछ के चेहरे झुलस गए।दीपावली से 15–20 दिन पहले जब देश पटाखा जलाने और उससे होने वाले प्रदूषण के नुकसान के बीच बहस में उलझा था, इंस्टाग्राम और यूट्यूब की रील में पीवीसी पाइप से बनी एक पटाखा गन को कूल अंदाज में प्रोत्साहित किया जा रहा था। कंटेंट बनाने वाले इसे ग्रीन पटाखा बता रहे थे। उसी बीच शहर के अलग–अलग हिस्सों में कुछ लोगों ने सड़क किनारे चादर बिछाकर इसकी दुकानें लगाईं। वे पानी से भरे पाइप में कार्बाइड डालते, पत्थर के टुकड़े डालते, हिलाते और पत्थर निकाल लेते। उसके बाद लाइटर का बटन दबाते उसमें धमाका होता।

गिनिज वर्ल्ड रिकार्ड

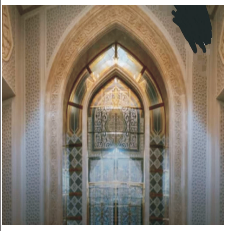

विश्व प्रसिद्ध कालीन नगरी भदोही ने एक बार फिर अपनी हस्तकला और कुशल कारीगरों की मेहनत से भारत का नाम रोशन किया है. यहां निर्मित एक विशाल कालीन को गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने दुनिया की सबसे बड़ी हैंड टफ्टेड कालीन के रूप में मान्यता दी है. ये कालीन मध्य एशिया की सबसे बड़ी मस्जिद– अस्ताना ग्रैंड (नूर–सुल्तान) मस्जिद में बिछाई गई है जो कजाकिस्तान में स्थित है.

अमर शहीद अशफाक उल्ला ख़ाँ — एक अभिनेता की नजर से

अभिनेत्रा / लेखक मज़हर हुसैन ख़ाँ

(सदा ए बुलंद न्यूज) जब मैं मंच या कैमरे के सामने किसी किरदार में उतरता हूँ, तो सबसे पहले उसकी आत्मा को महसूस करने की कोशिश करता हूँ। पर जब बात अशफाक उल्ला ख़ाँ की आती है, तो यह केवल एक किरदार नहीं रह जाता कृ यह एक जज़्बा बन जाता है। अशफाक़ उल्ला ख़ाँ सिर्फ एक नाम नहीं, वो एक ऐसी आत्मा हैं जिन्होंने अपने वजूद से आजादी की मिट्टी को सुगंध दी। एक अभिनेता के लिए यह समझना कि कोई इंसान अपनी जान हँसते–हँसते देश के नाम कुर्बान कर दे, अभिनय नहीं, बल्कि आत्मा का अनुभव है।

अशफाक़ उल्ला ख़ाँ की कहानी सिर्फ इतिहास की किताबों में बंद नहीं है, वह हर उस दिल में जिंदा है जो आजादी की क़ीमत जानता है। वह रामप्रसाद बिस्मिल के दोस्त ही नहीं, बल्कि उनके सपनों के साथी भी थे। दोनों की दोस्ती, मजहब से ऊपर, इरादे से जुड़ी थी कृ वो इरादा जो देश की गुलामी को तोड़ना चाहता था। एक कलाकार के रूप में जब मैं उनके जीवन को पढ़ता हूँ, तो मुझे यह महसूस होता है कि यह कोई साधारण संघर्ष नहीं था। यह वो दौर था जब हर सांस, हर कदम, हर लफ्ज में खतरा छिपा था। फिर भी उन्होंने मुस्कराते हुए कहा कृ "हम तो फाँसी के तख़्त को भी सजदे की जगह मानेंगे।"

एक अभिनेता जब अशफाक के किरदार को सोचता है, तो उसे सिर्फ संवाद याद नहीं आते, बल्कि उस संवाद की आग महसूस होती है। वह आग जो उनके दिल में थी, जब उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के सामने झुकने से इनकार किया। कल्पना कीजिए, एक ऐसा युवक जो महज 27 साल का हो, और उसे मालूम हो कि अब जिंदगी की डोर बस कुछ दिनों की मेहमान है, फिर भी उसके होंठों पर मुस्कान हो कृ यह कोई अभिनय नहीं, यह ईमान है, जो हर कलाकार को सिखाता है कि सच्चा अभिनय वही है जो आत्मा से निकले।

मेरे लिए अशफाक उल्ला ख़ाँ का जीवन एक अभिनय विद्यालय की तरह है। उन्होंने हमें सिखाया कि संवाद बोलना ही नहीं, बल्कि उसे जीना जरूरी है। जब उन्होंने कहा कृ "शहादत की तमन्ना हर दिल में नहीं होती, और जिसे होती है, वो मौत से डरता नहीं," कृ यह संवाद नहीं था, यह उनका जीता–जागता यक़ीन था। यही यक़ीन किसी कलाकार को सच्चा बनाता है, किसी किरदार को अमर बना देता है। अशफाक उल्ला ख़ाँ की शहादत सिर्फ एक मौत नहीं थी, वो एक संदेश था कृ कि देशप्रेम किसी जात, धर्म या भाषा से नहीं बँधता। वो मुसलमान थे, मगर उनकी रगों में हिंदुस्तान दौड़ता था। उन्होंने दिखाया कि मोहब्बत का असली रूप वही है जो सरहदों और मतभेदों से परे हो। एक अभिनेता जब यह सोचता है, तो उसे समझ आता है कि देशभक्ति का किरदार निभाना सिर्फ शब्दों का खेल नहीं, बल्कि आत्मा की पुकार है।

मैंने जब पहली बार अशफाक उल्ला ख़ाँ की तस्वीर देखी, तो उनकी आँखों में एक अजीब सुकून और तेज देखा। वो तेज ऐसा था जो मौत को भी मात दे सकता था। ऐसा लगता है जैसे वो अब भी कह रहे हों कृ "वक़्त हमें मिटा सकता है, पर हमारे इरादों को नहीं।" यही बात मुझे हर बार झकझोर देती है। और जब भी मैं किसी मंच पर देशभक्ति का अभिनय करता हूँ, तो मुझे लगता है कि कहीं न कहीं अशफाक़ की आत्मा मुझे देख रही है, मुस्कुरा रही है, और कह रही है कृ "अच्छा कर रहे हो बेटे, लेकिन सच्चाई कभी मत छोड़ना।"

आज जब देश तरक्क़ी की राह पर है, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह राह अशफाक़ जैसे नौजवानों के ख़ून से बनी है। उनकी शहादत ने हमें वो हक़ दिया, जिसकी कीमत हम शायद पूरी तरह कभी चुका नहीं सकते। एक अभिनेता के रूप में मेरा फर्ज है कि जब भी मैं किसी मंच या स्क्रीन पर अशफाक़ का नाम लूँ, तो उसकी गरिमा महसूस करूँ, उसके जज़्बे को दिल से सलाम करूँ।

अशफाक उल्ला ख़ाँ की जिंदगी हमें यह सिखाती है कि सच्चा इंसान वही है जो अपने वक़्त से लड़ता है, जो डर के आगे सिर नहीं झुकाता। उनकी शहादत का असर सिर्फ इतिहास तक सीमित नहीं, बल्कि हर उस कलाकार, हर उस नौजवान तक पहुँचना चाहिए जो कुछ बदलना चाहता है।एक अभिनेता की नजर से अगर मैं कहूँ, तो अशफाक उल्ला ख़ाँ किसी फिल्म के हीरो नहीं कृ बल्कि वो हीरो हैं जिन्होंने असली कहानी जी है। उन्होंने अभिनय नहीं किया, उन्होंने अपने किरदार को ख़ून से लिखा। और यही वजह है कि उनका नाम हर उस मंच, हर उस दिल में जिंदा रहेगा जहाँ आजादी की गूंज सुनाई देगी।

कानूनी सलाह

पुलिस किसी को 24 घंटे से अधिक बिना मजिस्ट्रेट की अनुमति थाने पर निरुद्ध नहीं रख सकती

सय्यद शाजिम अली
(एडवोकेट जिला न्यायालय शाहजहांपुर)

(सदा ए ब ु ल ं द न्यूज – शाहजहांपु र) ब ा त 1997 की प ु लि स द्वारा जब क ो ई व्यक्ति अभिरक्षा में लिया जाता था तो पुलिस उसे बहुत मारती पीटती थी और इसी मारपीट में कई व्यक्तियों की मृत्यु तक हो गई तब मामला पहुंचा माननीय उच्चतम न्यायालय के समक्ष तब सुप्रीम कोर्ट ने देखा कि ये घटनाएं पूरे देश विदेश में चल रही तब उस मामले को देखते हुए माननीय उच्चतम न्यायालय ने उससे पहले एक जजमेंट को देखा जो था जोगिंदर बनाम यूपी राज्य 1994 इसमें भी पुलिस द्वारा एक वकील साहब को अरेस्ट किया गया था और 3,4 दिनों उन्हें थाने पर निरुद्ध रखा और प्रताड़ित किया ये मामला उच्च अदालत में पहुंचा तो जब कोर्ट ने पुलिस से सवाल किए तो पुलिस मुकर गई बोली हमने इन्हें 24 घंटे से अधिक थाना पर नहीं रखा और जो चोटें इनके आई ये हमारे द्वारा नहीं दी गई तो उसमें सभी पुलिस बल को कानून का सही अनुपालन करने की चेतावनी दी और संविधान के अनुच्छेद 21,22 किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता अत्यधिक महत्वपूर्ण है अरेस्ट के लिए कहा कि जब तक आवश्यक न हो गिरफ्तार करना जरूरी नहीं 24 घंटे के अंदर पुलिस को आरोपी को मजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित करना अनिवार्य है अरेस्ट memo सही ढंग से तैयार करना अनिवार्य है उसमें गिरफ्तारी के कारण स्पष्ट करना अनिवार्य होगा डी के बसु के मामले में पुलिस को 11 बिंदुओं पर विशेष ध्यान देने को कहा–

अगर आपको पुलिस अरेस्ट करती है तो ये बातें याद रखनाः

पुलिस किसी को 24 घंटे से अधिक बिना मजिस्ट्रेट की अनुमति थाने पर निरुद्ध नहीं रख सकती

पुलिस किसी व्यक्ति को शारीरिक या मानसिक रूप से प्रताड़ित थर्ड डिग्री नहीं दे सकती

थर्ड डिग्री वह होती है जिसमें पुलिस किसी व्यक्ति को शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना देती है।

फर्स्ट डिग्री पुलिस द्वारा व्यक्ति से बातचीत सेकेंड डिग्री फोर्स / प्रेशर देना और थर्ड डिग्री मारना पीटना ये थर्ड डिग्री गैर कानूनी है ।

अरेस्ट उमउव तैयार करेगी उसमें कम से कम 1 गवाह गिरफ्तारी सत्यापित करना आवश्यक होगा और गिरफ्तारी का दिनांक व समय मेंशन करना अनिवार्य होगा।

1.गिरफ्तार व्यक्ति को क्यूं गिरफ्तार कर रहे बताएगी।
2. व्यक्ति के परिवार जन या दोस्त आदि को सूचना देगी 3. किसी व्यक्ति को गिरफ्तार किए जाते समय पुलिस को अपना पद अपना नाम व सभी पुलिस कर्मियों को पद नाम स्पष्ट करने होंगे 4. गिरफ्तार व्यक्ति को उसके अधिकारों से अवगत करवाया जाएगा 5. गिरफ्तार किस जगह किया ये केस डायरी में लिखा जाएगा और किसे सूचना दी उस व्यक्ति की गिरफ्तारी की ये भी लिखा जाएगा 6.गिरफ्तारी के समय यदि व्यक्ति को शारीरिक छोटी बड़ी चोट लगी है उसका ब्यौरा दिया जाएगा केस डायरी में। 7. गिरफ्तार व्यक्ति की हर 48 घंटे में चिकित्सीय परीक्षण कराया जाएगा। 8. गिरफ्तार व्यक्ति का अरेस्ट मेमो सहित सभी दस्तावेज की प्रतियां मजिस्ट्रेट साहब को भेजी जाएंगी। 9. गिरफ्तार व्यक्ति को उसके वकील साहब से मिलने की अनुमति दी जाएगी ये अनुमति पूछताछ के समय आवश्यक नहीं होगी ।

और सभी जिला और राज्य मुख्यालयों पर एक पुलिस नियंत्रण कक्ष उपलब्ध कराया जाना चाहिए, जहां गिरफ्तारी के संबंध में सूचना और गिरफ्तार व्यक्ति की हिरासत के स्थान की जानकारी गिरफ्तारी के प्रभारी अधिकारी द्वारा गिरफ्तारी के 12 घंटे के भीतर दी जाएगी और पुलिस नियंत्रण कक्ष में इसे एक दृश्यमान नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित किया जाना चाहिए।इस समय पुलिस माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा दी गई गाईड लाइन का उल्लंघन कर रही जो पूर्णतः गैर कनूनी है और माननीय उच्चतम न्यायालय की अवहेलना है।

पुलिस व्यक्तियों को मार पीट कर उनकी छवि धूमिल करने के लिए मीडिया के सामने उनकी परेड करा रही यदि बाद में वह सभी निर्दोष पाए जाएंगे तो उनको शारीरिक व मानसिक हुई क्षति की पूर्ति को कौन करेगा ।माननीय उच्चतम न्यायालय को ऐसे सभी पुलिस अधिकारियों और पुलिस कर्मियों पर मुकदमा पंजीकृत करने का आदेश देना चाहिए सभी कोर्ट ऑफ कंटेम्प्ट के दोषी हैं

पत्नी को मोटी कहना जुर्म, और पड़ गया जुर्माना

(सदा ए बुलंद न्यूज) सोशल मीडिया पर इन दिनों तुर्की से जुड़ा एक अजीब लेकिन दिलचस्प मामला तेजी से वायरल हो रहा है. यहां एक अदालत ने एक पति को अपनी पूर्व पत्नी को सिर्फ इसलिए मुआवजा देने का आदेश दिया क्योंकि उसने अपने फोन में पत्नी का नाम "चब्बी" (मोटी) के नाम से सेव कर रखा था. सुनने में भले यह बात मामूली लगे, लेकिन अदालत ने इसे अपमानजनक मानते हुए महिला के पक्ष में फैसला सुनाया है.मामला तुर्की के उसाक शहर का है. वहां एक पति–पत्नी के बीच तलाक चल रहा था. इसी दौरान पत्नी ने अदालत में बताया कि उसके पति ने अपने फोन की कॉन्टैक्ट लिस्ट में उसका नाम 'टॉम्बेक' लिख रखा था. 'टॉम्बेक' शब्द का मतलब तुर्की भाषा में "चब्बी" यानी "मोटी" होता है. पत्नी का कहना था कि यह नाम उसका मजाक उड़ाने के लिए रखा गया था और इससे उसकी भावनाएं आहत हुईं।

غزہ کے کمانڈر ابو عبیدہ کا اہم پیغام

اللہ کی سلامتی رحمتیں اور برکتیں آپ پر ہوں میں غزہ سے آپ سے مخاطب ہوں۔۔۔۔اسی غزہ سے جو نا قابل شکست ہے، جان نثار ہے، ثابت قدم ہے، صبر وثبات کا استعارہ ہے، اللہ کا خصوصی انعام ہے جو اس پر اللہ کی سکینت نازل ہو رہی ہے۔ ہم یہ پیغام سب مسلمانوں کو پہنچا رہے ہیں م نہیں جانتے کہ جلد یا بدیر ہم پیغام دینے کے لیے موجود رہیں گے بھی یا نہیں۔تو اللہ سے دعا کے ساتھ اپنی بات کا آغاز کرتے ہیں کہ اللہ ہمارے ان لفظوں کو ہمارے حق میں حجت بنا دیجئے گا۔ یہ ہمارے خلاف گواہی نہ دیں۔آمین

پہلا پیغام یہ ہے ہم سب مسلمانوں کو یہ بتانا چاہتے ہیں کہ ہم فقط اللہ کی عبادت کرتے ہیں۔ہم اپنے رب کی تقسیم سے راضی ہیں۔ہم اپنے رب کی مدد سے قطعا مایوس نہیں ہیں۔ہمیں اپنے رب کی مدد جلد آنے پر یقین ہے اور ایسی جگہ سے مدد آنے پر جہاں سے ہمیں توقع بھی نہیں ہو۔ جہاں ہمارا خیال بھی نہ گیا ہو۔

اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ وَ لَمَّا يَاۡتِكُمۡ مَّثَلُ الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِكُمۡ-مَسَّتۡهُمُ الۡبَاۡسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلۡزِلُوۡا حَتّٰى يَقُوۡلَ الرَّسُوۡلُ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ مَتٰى نَصۡرُ اللّٰهِ-اَلَا اِنَّ نَصۡرَ اللّٰهِ قَرِيۡبٌ(214)

کیا تمہارا یہ گمان ہے کہ جنت میں داخل ہو جاؤ گے حالانکہ ابھی تم پر پہلے لوگوں جیسی حالت نہ آئی۔انہیں سختی اور شدت پہنچی اور انہیں زور سے ہلا ڈالا گیا یہاں تک کہ رسول اور اس کے ساتھ ایمان والے کہہ اٹھے: اللہ کی مدد کب آئے گی؟ سن لو! بیشک اللہ کی مدد قریب ہے۔)

اللہ کی قسم! ہم ایسی سختی اور شدت سے اس زور سے جھنجھوڑ، ہلا دیے گئے ہیں کہ ہماری جانیں ہمارے کلیجے تک لرزاں دیئے گئے ہیں۔لیکن ہم اپنے رب کی رحمت سے قطعا مایوس نہیں ہیں۔ جو اپنے رب کو جا ملے ہیں ہم انھیں شہید گمان کرتے ہیں اور جو باقی بچ گئے ہیں وہ فتح نصرت کی امید کرتے ہیں۔اور یہ اللہ کے لیے کوئی مشکل نہیں ہے۔

اور دوسرا پیغام یہ ہے کہ جو کوئی ہمیں سن رہا ہے، وہ ہماری مدد کر سکتا ہے۔۔۔۔۔اپنی دعاؤں سے۔۔۔اپنی التجاؤں سے۔۔یہ مومن کا ہتھیار ہے۔اسکی طاقت کو ہلکا نہ سمجھیں۔اگر آپ ہمارے معاملے کچھ بھی کرنے کی قدرت نہیں رکھتے تو اللہ کے پاس آپکا یہ عذر آپکو اسکے حساب کتاب سے بچالے گا۔لیکن دعا تو آپ پھر بھی کر سکتے ہیں۔اپنے بچوں کو، اپنے اہل وعیال کو لے کے بیٹھیں اور ہمارے لیے دعا کیجیے۔ نمازوں میں، سجدوں میں ہمارے لیے خلوص دل سے گریہ وزاری کیجئے۔ہمیں آپکی دعاؤں کی اشد ضرورت ہے۔ ہمارے نبی محمّد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ تکلیف میں اپنے ہاتھ اللہ کے حضور پھیلا لو اور پختہ یقین سے، متوجہ دل کے ساتھ دعا مانگو۔ایسی دعا کا ضرور جواب دیا جائے گا۔ انشاء اللہ

تیسرا پیغام یہ ہے جو مسلمان بھی یہ وڈیو سن رہے ہیں (میسج پڑھ رہے ہیں) وہ ہمارے یہ پیغامات اوروں تک پہچانے کا سبب بنیں۔ کیونکہ اب بھی ایسے لوگ ہیں جو غفلت کی چادر تانے سوئے پڑے ہیں کہ جیسے انہیں ہمارے حال کی کوئی خبر نہیں پہنچی ہے۔شاید وہ ابابیلوں کی آمد میں منتظر بیٹھے ہیں جو آکے اصحاب فیل کو تباہ کرنے کے لیے بھیجی گئی تھیں۔ اللہ کے سوا کوئی طاقت نہیں۔ہمارے پیغام کو پھیلائیں۔ہماری خبروں کو آگے بڑھائیں۔ ہمارے بچوں کی تصویریں دوسروں کو بھی دکھائیں۔ ہر جگہ ملبہ کے ڈھیر ہیں۔غزہ اب رہنے کے لیے بالکل محفوظ نہیں ہے۔ہم نے ایسی شدید تباہی پہلے کبھی پہلے نہیں دیکھی۔ ہمارے لوگ، ہمارے بھائی، ہمارے پیارے۔۔۔۔اب شہداء میں لکھے جا چکے ہیں۔۔ایک ایک خاندان کے 40، کہیں ,50 کہیں 100 افراد اکھٹے اموات کے شمارے میں درج کیے جا چکے ہیں۔اور جو باقی بچ گئے ہیں وہ اپنے رب کی طرف اچھے پلٹنے کے انتظار میں ہیں۔ اس صورتحال میں ہم امید کرتے ہیں کہ آپکے پاس یوم جزا اپنی جان کو چھڑالانے جتنا قابل کوئی عذر ہوگا۔ اللہ ضرور پوچھے گا کہ جب مسلمانوں پر مصیبت کی یہ گھڑی آئی تو آپ نے کیا کیا کیا دعاوں کو بھی محدود کیا جاسکتا ہے۔ یا ان دعاوں کی کوئی حد بھی ہے۔آپکے سڑکوں پر ہمارے لیے مظاہرے۔۔۔۔۔ احتجاجا نکلنا۔۔آپکا لوگوں کو ہمارے لیے پکارنا۔۔آپکی آواز کا ہمارے لیے بلند ہونا۔۔۔ جو غافلوں کو، بے حسوں کو ہمارے لیے بیدار کردے۔۔۔۔۔۔شاید یہ کاوشیں آپ کے حق میں قابل قبول عذر بن جائیں۔

اللہ کی حمدوثنا بیان کرتا ہوں۔ یہ آزمائش دوسری آزمائشوں کا پیش خیمہ ہے اور ان سب کے نتیجے میں ہم آخرت میں اجر کے امیدوار ہیں۔ غاصبوں کے تسلط کی یہ اندھیری رات طویل اور شدید ہوچکی ہے۔اب ان ہی ظلم کے اندھیروں سے روشن صبح چمکنے کو ہے۔ اللہ نے اپنے بندوں سے اپنی مدد کا وعدہ کر رکھا ہے۔۔۔۔بھلے کچھ وقت اور لگے گا لیکن فتح ونصرت اسی کے بندوں کو حاصل ہو کے رہے گی۔ میں قسم کھا کے کہتا ہوں کہ ان حالات میں ہمارے بہترین نفوس جام شہادت پی رہے ہیں۔ ہر خاندان کا بہترین شخص شہید ہو چلا ہے۔اور کائنات کے رب کی بڑائی کے لیے ہی یہ سب شہادتیں۔۔۔۔یہ سب گواہیاں۔ بے شک۔۔۔۔سب تعریفیں تمام شکرانے، تمام جہانوں کے رب کے لیے ہیں۔

میں اپنی بات زیادہ طویل نہیں کرنا چاہتا۔بس یہ جتلانے آیا تھا کہ میں اللہ کی خاطر آپ سب سے محبت کرتا ہوں۔ آپ ہمارا یہ پیغام عام کردیجیے۔ ہماری آواز بن جایئے۔ہمارا خون زمین کو رنگ رہا ہے۔ ہم آپ سے اس کے لیے پرزور تحریک چلانے کا تقاضا کرتے ہیں۔تو اپنے حصے کا کام کرنے کے لیے جی جان لڑا دیجیے۔ اے اللہ ہمیں ثابت قدم رکھیے ہمیں مضبوط کردیجیے ہمارے لیے حسن خاتمہ لکھ ۔کمانڈر ابو عبیدہ

(صدائے بُلند نیوز) جمادی الاوّل: وہ مہینہ ہے جس میں رسول اللہؐ نے سیدہ خدیجہؓ سے شادی کی جمادی الاول وہ مہینہ ہے جس میں رسول اللہؐ نے سیدہ خدیجہؓ سے شادی کی۔ اللہ تعالیٰ نے جنگ متعہ میں مسلمانوں کو فتح عطا فرمائی۔ زینب بنت علیؓ کی ولادت اور حضرت فاطمہؓ کی وفات ہوئی جمادی الاول اسلامی (ہجری) کیلنڈر کا پانچواں مہینہ ہے۔اسے جمادۃ الاولیٰ بھی کہا جاتا ہے۔ زمانہ جاہلیت میں لوگ مہینوں کے نام اس موسم کے مطابق رکھتے تھے جس میں وہ آتے تھے۔ جمادہ ایک لفظ سے ماخوذ ہے جس کا مطلب خشک، خشک زمین یا بارش سے خالی زمین ہے۔اس کا مطلب جمنا بھی ہوسکتا ہے۔تاریخی طور پر اس کا تعلق اس وقت کے موسمی حالات سے ہوسکتا ہے۔ تاہم، چونکہ اسلامی سال قمری کیلنڈر پر چلتا ہے اور ہر سال دس، گیارہ دن آگے بڑھتا ہے، لہذا مہینہ کا نام اب موسمی حالات سے مطابقت نہیں رکھتا۔اس سال جمادی الاول ماہ ربیع الثانی کے بعد 15 نومبر 2023 کو شروع ہوا۔

جمادی الاول کے اہم واقعات:

اس مہینے کے ساتھ کوئی خاص اعمال وابستہ نہیں ہیں، لیکن بہت سے اہم اسلامی واقعات رونما ہوئے، جن پر غور کرکے ہم اس سے اہم سبق حاصل کر سکتے ہیں۔بعض علماء کا خیال ہے کہ جمادی الاول وہ مہینہ ہےجس میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے سیدہ خدیجہ رضی اللہ عنہا سے شادی کی۔ سیدہ خدیجہ رضی اللہ عنہا نے اپنی ایک سہیلی نفیسہ کے ذریعے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو نکاح کا پیغام بھیجا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے چچا سے مشاورت کے بعد شادی کی تجویز قبول کر لی۔اس وقت آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی عمر 25 سال تھی اور سیدہ خدیجہ رضی اللہ عنہا کی عمر 40 سال۔ سیدہ خدیجہ رضی اللہ عنہا اسلام کی ان 4 خواتین میں سے ایک ہیں جنہوں نے کامل ایمان حاصل کیا۔ وہ اسلام قبول کرنے والی پہلی شخصیت تھیں، اور انہوں نے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کو مسلسل جذباتی اور مالی مدد فراہم کی۔

جمادی الاول میں رونما ہونے والا ایک اور اہم واقعہ جنگ متعہ ہے جو ایک سے دو لاکھ رومی اور عرب فوجیوں اور صرف 3000 مسلمانوں کے درمیان ہوئی۔ مخالفین کی بہت بڑی تعداد ہونے کے باوجود اللہ تعالیٰ نے جنگ متعہ میں مسلمانوں کو فتح عطا فرمائی۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس میں حصہ نہیں لیا اور حضرت زید رضی اللہ عنہ کو جنگ کے لیے چنا گیا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا، اگر زید بن حارثہ زخمی ہو جائیں تو جعفر بن ابی طالب ان کا جانشین ہوں گے۔ اگر جعفر زخمی ہو جائے تو عبداللہ بن رواحہ ان کی جگہ لے لیں (بخاری و مسلم)۔

سب سے پہلے حضرت زید رضی اللہ عنہ کو شہید کیا گیا پھر حضرت جعفر رضی اللہ عنہ نے ذمہ داری اٹھائی۔ جنگ سے واپس آنے والے سپاہیوں نے حضرت جعفر رضی اللہ عنہ کی بہادری سے لڑنے کی تعریف

کی اور دعویٰ کیا کہ ان کے 90 زخم لگےتھے اور جنگ میں اپنا ہاتھ کھو چکے تھے۔ تاہم، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اعلان کیا کہ اللہ تعالیٰ نے جعفر رضی اللہ عنہ کو جنت میں اڑنے کے لیے پروں سے نوازا ہے۔

اسی مہینے میں حضرت عبداللہ رضی اللہ عنہ کو بھی نشانہ بنایا گیا۔حضرت عبداللہ رضی اللہ عنہ عرب کے مشہور شاعر تھے اور انہیں 'شاعرِ رسول' کا خطاب دیا گیا تھا۔ درحقیقت وہ مدینہ کے لوگوں کے لیے فتح کا پیغام لے کر آئیتھے۔ جمادی الاول میں ایک اور وفات رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے دادا حضرت عبدالمطلب کی تھی۔ زینب بنت علی رضی اللہ عنہا کی ولادت، 5 جمادی الاول حضرت امام حسین رضی اللہ عنہ کے بعد زینب رضی اللہ عنہا، فاطمہ رضی اللہ عنہا کی تیسری اولاد تھیں جو 5 جمادی الاول کو پیدا ہوئیں۔ انہوں نے زندگی بھر مصائب کا سامنا کیا اور اپنی زندگی میں امام حسین رضی اللہ عنہ کو کھو دیا۔ زینب رضی اللہ عنہا کا مقبرہ مصر میں ہے اور بہت سے لوگ اس کی زیارت کرتے ہیں۔

فاطمہ رضی اللہ عنہا کی وفات، 10 جمادی الاول حضرت فاطمہ رضی اللہ عنہا کی وفات بیماری کی وجہ سے 23 سال کی عمر میں 10 جمادی الاول کو ہوئی۔ انتقال کے بعد 13 جمادالاول کو حضرت علی رضی اللہ عنہ نے فاطمہ رضی اللہ عنہا کو دفن کیا۔

زین العابدین کی ولادت، 15 جمادی الاول زین العابدین بھی اسی مہینے میں پیدا ہوئے۔ وہ اپنے ساتھیوں میں محترم تھے۔ وہ بہت متقی تھے۔ ابوحمزہ رضی اللہ عنہ کے مطابق رمضان کے مہینے میں وہ ساری راتیں عبادت میں مشغول رہتے تھے۔ آخر میں انہیں زہر دیا گیا۔ کہا جاتا ہے کہ ان کی وفات کے بعد لوگوں کو معلوم ہوا کہ یہ زین العابدین تھے جو رات کو منہ ڈھانپ کر لوگوں میں کھانا تقسیم کرتے تھے تاکہ کوئی انہیں پہچان نہ سکے۔

جمادی الاول کوئی خاص عبادت کا مہینہ نہیں ہے۔ تاہم، ہمیں صدقہ جاریہ، تلاوت قرآن، استغفار اور نفلی عبادات کرنا چاہیے۔ اپنے وقت کو سمجھداری سے استعمال کرنا ضروری ہے۔ مومن کے لیے ہر لمحہ، ہر دن ثواب اور نیکیوں سے گناہوں کو مٹانے کا قیمتی موقع ہے۔ سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہما سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا؟ پانچ سے پہلے پانچ چیزوں کا فائدہ اٹھاؤ: اپنی جوانی کا بڑھاپے سے پہلے، اپنی صحت کا بیماری سے پہلے، اپنی دولت کا اپنی غربت سے پہلے، اپنی فراغت کا اپنے کام سے پہلے، اور اپنی زندگی کا اپنی وفات سے پہلے (شعب الایمان 5 7 5 9۔)

ٹٹھری قدرت کا حیرت انگیز پرندہ

سائنس نے بہت کچھ جانا، لیکن کچھ راز اب بھی فطرت کے پاس ہیں۔ ٹٹھری ایسا پرندہ ہے جو صدیوں سے لوگوں کو حیران کر رہا ہے۔ یہ صرف پرندہ نہیں، بلکہ قدرت کی خاموش زبان ہے۔

ٹٹھری کی سات باتیں چار انڈے:

چار ماہ بارش اگر ٹٹھری چار انڈے دے، تو سمجھ لو کہ بارش مسلسل چار ماہ تک ہوگی۔ کسان آج بھی اسے دیکھ کر فصلوں کا اندازہ لگاتے ہیں۔

اونچی زمین پر انڈے :زیادہ بارش

اگر ٹٹھری زمین کے اونچے حصے پر انڈے دے، تو بارش بہت زیادہ ہوگی۔ پانی کی تباہی آسکتی ہے۔

یہ کبھی درخت، رسی یا دیوار پر نہیں بیٹھتی ٹٹھری ہمیشہ زمین کے قریب رہتی ہے۔ یہ اس کی فطرت ہے اور یہی اسے خاص بناتی ہے۔

چھت پر انڈے :پانی کی تباہی

چھت پر انڈے دینا خطرے کی نشانی ہے۔ یہ بتاتی ہے کہ بارش اور پانی سے نقصان ہو سکتا ہے۔ کرکشترا کے باہر مردہ نہیں ملتی یہ پرندہ صرف اپنے علاقے میں رہتا ہے، جیسے اس کی تقدیر خود محدود ہے۔ جس کھیت میں انڈے، وہ کبھی خالی نہیں ہوتا ٹٹھری کی موجودگی کھیت میں برکت لاتی ہے۔ فصلیں ہمیشہ اچھی ہوتی ہیں۔

انڈے نہ دینا: خطرے کی نشانی

اگر سال بھر ٹٹھری نے انڈے نہیں دیے، تو سمجھ لو کوئی بڑی آزمائش یا خطرہ آنے والا ہے۔

ٹٹھری صرف پرندہ نہیں بلکہ قدرت کی نصیحت ہے۔ یہ ہمیں بتاتی ہے کہ ہر چھوٹی مخلوق میں بھی حکمت چھپی ہے۔ سائنس بہت کچھ بتا سکتی ہے، لیکن کچھ اسرار صرف قدرت کے پاس ہیں۔ ہماری زبان میں ٹٹھری بولتے ہیں اسے آپ اپنی زبان میں اس کا نام بتائیں

अफ़सानों ,कविताओं, ग़ज़लों, व साहित्कय – लफ़्ज़ों की अपनी दुनिया...

आप मालदार होकर भी मोहताज क्यूं... ?

(सदा ए बुलंद न्यूज) हमारी जिंदगी में बीमारियां परेशानियां, दुश्वारियां, मुश्किलातें, मोहताजगी क्यूं आतीं हैं क्यूंकि इंसान ख़ुदा के हुक्म से हटकर अपनी जिंदगी को जीने की जद्दोजहद कशमोकश में बहुत तेजी से जुट जाता है वह सोचता है कि मुझे जो जिन्दगी मिली है इसे हम अपने तरीके से खूब इंजॉय करके जीएंगे, लेकिन ऐसा होता नहीं है अगर इंजॉए और सुकून चौन से जिन्दगी जीना है तो रब के दिए हुए हुक्म से जीने की आदतें डालिए क्यूंकि हर चीज पर वही कादिर है। उसकी मर्जी के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। अगर हम दुसरों के भले के बारे में सोचेंगे तभी रब हमारा भला करेगा जो बात 'सदक़ा' निकालने की इस आर्टिकल में दी गई है इसे सिर्फ एक या दो महीने ही अम्ल में लाइएगा आपको खुद इतना सुकून मिलेगा कि आप हैरत में पड़ जाएंगे।

ये वाकया एक सऊदी नौजवान का है, ये अपनी जिन्दगी से मुत्मइन नहीं था, उसकी तनख्वाह सिर्फ 4 हजार रियाल थी, शादीशुदा होने की वजह से उसके खर्चे उसकी तनख्वाह से कहीं ज्यादा थे, महीना खत्म होने से पहले उसकी तनख्वाह खत्म हो जाती और उसे कर्ज लेना पड़ता। यूँ वो आहिस्ता आहिस्ता कर्ज के दलदल में डूबता जा रहा था और उसका यकीन बनता जा रहा था कि अब उसकी जिन्दगी इसी हाल में गुजरेगी। उसकी बीवी उसकी माली हालत का ख्याल रखती थी, इसके बावजूद भी कर्जों के बोझ में तो सांस लेना भी मुश्किल होता है। उसका एक दोस्त था जिसके राय मशवरों को वह बहुत अहमियत देता था। एक दिन बातों ही बातों में उसने अपने हालात उस दोस्त से बयान कर दिए। उसके दोस्त ने उसकी मुश्किलात को बहुत गौर से सुना और कहा कि मेरी राय ये है कि तुम अपनी तनख्वाह में से कुछ हिस्सा सदका किया करो।

उस सऊदी नौजवान ने हैरत से कहा, जनाब मुझे घर के खर्चे पूरे करने के लिए कर्ज लेना पड़ता है और आप सदका निकालने को कह रहे हैं? खैर सऊदी नौजवान ने घर आ कर अपनी बीवी को ये बात बताई तो वो कहने लगी कि तजुर्बा करने में क्या हर्ज है? हो सकता है अल्लाह जल्ल ए शान हु तुम पर रिज्क के दरवाजे खोल दे।

कहता है: मैंने 4 हजार रियाल में से 30 रियाल महाना सदके के लिए निकलना शुरू किया और महीने के आखिर में अदा करना शुरू कर दिया। सुबहानअल्लाह, कसम खा के कहता हूं मेरी तो हालत ही बदल गयी, कहाँ मैं हर वक्त माल की टेन्सन में और सोचों में रहता था और कहाँ अब मेरी जिन्दगी फूल हो गयी थी, हल्कीफुल्की और आसान, कर्जों के बावजूद मैं खुद को आजाद महसूस करता था,एक ऐसा जहनी सुकून था कि क्या बताऊँ।

फिर चंद माह बाद मैंने अपनी जिन्दगी को सेट करना शुरू किया अपनी तनख्वाह को खर्चों के हिसाब से अलग अलग हिस्सों में बाँट दिया, और यूँ ऐसी बरकत हुई जैसी पहले कभी नहीं हुई थी। मैंने हिसाब लगाया और मुझे अंदाजा हुआ कि कितनी मुद्दत बाद इन शा अल्लाह कर्जों के बोझ से मेरी जान छूट जायेगी।

फिर अल्लाह जल्ल ए शान हु ने एक और

रास्ता खोला और मैने अपने एक अजीज के साथ उसके प्रॉपर्टी डीलिंग के काम में हिस्सा लेना शुरू किया। मैं उसे ग्राहक ला कर देता और उस पर मुझे मुनासिब प्रॉफिट हासिल होता।

अल हम्दु लिल्लाह अब जब भी मैं किसी ग्राहक के पास जाता वह मुझे किसी दूसरे तक रहनुमाई जरूर करता। मैं यहाँ पर भी वही अमल दुहराता कि मुझे जब भी प्रॉफिट मिलता मैं उस में से अल्लाह के लिए सदका जरूर निकालता सदका क्या है? कोई नही जानता सिवा उसके जिसने इसे आजमाया हो।

सदका करो, और सब्र से चलो, अल्लाह के फजल से खैर व बरकतें अपनी आँखों से बरसते देखोगे।

नोट:1–जब आप किसी मुसलमान को तनख्वाह में से सदके के लिए रकम अलग निकालने को कहेंगे, और वो इस पर अमल करेगा तो आपको भी उतना ही अज्र मिलेगा जितना सदका करने वाले को मिलेगा। और सदका देने वाले के अज्र में कोई कमी नहीं होगी।

2– ऐसे ही अगर आप ये मैसेज आगे भेजेंगे और किसी ने सदका देने का मामूल बना लिया तो आप के लिए भी सदका देने वाले के बराबर अज्र है। अगर सदका करने वाला ये जान ले कि उसका माल मुस्तहक के पास जाने के पहले अल्लाह के पास पहुँच जाता है, तो यकीनन देने वाले को लज्जत लेने वाले से कही ज्यादा होगी।

क्या आपको सदके का फायदा मालूम है? खास तौर पर 17, 18 और 19 को तवज्जह से पढें।

सुन लें–सदका देने वाले भी और जो उसका सबब बनते हैं वो भी। **1.**सदका जन्नत के दरवाजों में से एक दरवाजा है। **2.** सदका आमाल स्वल्हा में से अफजल अमल है। **3.** सदका कयामत के दिन साया होगा, और अपने देने वाले को आग से बचाएगा। **4.** सदका अल्लाह जल्ल ए जलाल हु के गजब को ठंडा करता है, और कब्र की गर्मी में ठंडक का सामान है । **5.** मैय्यत के लिए बेहतरीन हदिया, और सबसे ज्यादा नफाबख्श चीज सदका है, और सदका के सवाब को अल्लाह तआला बढ़ाता रहता है। **6.** सदका नफ्स की पाकी का जरिया और नेकियों को बढ़ाता है। **7.** सदका कयामत के दिन सदका करने वाले के चेहरे का सुरूर और ताजगी का सबब है। **8.** सदका कयामत की हौलनाकी के खौफ से अमान है। और गुजरे हुए पर अफसोस नही होने देता। **9.** सदका गुनाहों की मगफिरत का सबब और सय्यिहात का कुफ्फराह है। **10.** सदका खुशखबरी है हुस्न ए खात्मा की, और फरिश्तों की दुआओं का सबब है। **11.** सदका देने वाला बेहतरीन लोगों में से है और इसका सवाब हर उस शख्स को मिलता है जो इसमें किसी तौर पर भी शरीक हो। **12.** सदका देने वाले से, खैर ए कसीर और बड़े अज्र का वादा है। **13.** अल्लाह की राह में खर्च करना आदमी को मुत्तकीइन की सफ में शामिल कर देता है, और सदका करने वाले से अल्लाह की मख्लूक मुहब्बत करती है।**14.** सदका करना जूद वो करम और सखावत की अलामत है। **15.** सदका दुआओं के कुबूल होने और मुश्किलों से निकालने का जरिया है। **16.** सदका बला (मुसीबत) को दूर करता है, और दुनिया में 70 दरवाजे बुराई के बंद करता है।

17. सदका उम्र में और माल में इजाफेका सबब है, कामयाबी और रिज्क के बढ़ने का सबब है। **18.** सदका इलाज भी है दवा भी और शिफा भी। **19.** सदका आग से जलने, पानी में डूबने, चोरी और बुरी मौत को रोकता है। **20.** सदका का अज्र मिलता है, चाहे जानवरों और परिंदो पर ही क्यों न हो।

बच्चों पर वीडियो गेमिंग के नुकसानात और उनसे बचने के तरीके

(सदा ए बुलंद न्यूज) आज का दौर इलेक्ट्रॉनिक्स का दौर है। इस दौर में जहाँ बड़े बूढ़े और जवान स्क्रीन के आदी होते जा रहे हैं, वहीं बच्चों ने भी वीडियो गेम्स को अपनी मसनूई दुनिया बना लिया है। और वो इस दुनिया में ऐसे मगन नजर आते हैं जैसे कि हकीकी दुनिया या उसके लोगों से उन्हें किसी भी तरह का ताल्लुक़ बल्कि सलाम दुआ तक मुश्किल मालूम होता है। दो दिन पहले हम एक साहब की दावत पर उनके घर गए। सलाम दुआ के बाद हम बैठे तो हमने उनके बच्चे के बारे में पूछ लिया कि नन्हे मियाँ नजर नहीं आ रहे? जवाब मिला कि वो गेम खेल रहे हैं। और उन्हें आवाजें दी जाने लगीं, मगर नन्हे मियाँ यहाँ तो तब किसी की आवाज उनके कानों तक का सफर तय करे जब वह यहां मौजूद हों, वो तो अपने वीडियो गेम की मसनूई (आर्टीफिशियल) दुनिया में गुम थे।हमने कहा रहने दीजिए तो अहले खाना शर्मिंदगी सी महसूस करने लगे और बच्चे को गेम की टेबल से बमुश्किल उठा कर लाए, नन्हे मियाँ जैसे–तैसे आए और दूर ही से ऐसा सलाम किया जैसे हमने उनकी सबसे महबूब चीज पर जबरदस्ती कब्जा कर रखा हो। और फिर कमरे की तरफ रवाना हो गए। उनके वालिद पकड़ते रहे मगर नन्हे मियाँ न माने। फिर हमने कहा कि रहने दीजिए बच्चा है।मगर अच्छे ख़ासे अख़लाकमंद बच्चे की ये हालत देखकर हम सोचने पर मजबूर हो गए कि ये खेल है या क़ैदख़ाना?

अजीज वालिदैन! डिजिटल दौर ने बच्चों को एक नई दुनिया दी है कृ चमकदार स्क्रीन और तेजी से निगाहों के सामने तैरते खूबसूरत और खूंखार ग्राफिक्स की मसनूई (आर्टीफिशियल) दुनिया।

मगर अच्छे ख़ासे अख़लाकमंद बच्चे की ये हालत देखकर हम सोचने पर मजबूर हो गए कि ये खेल है या क़ैदख़ाना?

अजीज वालिदैन! डिजिटल दौर ने बच्चों को एक नई दुनिया दी है कृ चमकदार स्क्रीन और तेजी से निगाहों के सामने तैरते खूबसूरत और खूंखार ग्राफिक्स की मसनूई (आर्टीफिशियल) दुनिया। ऐसे बच्चे न ही अपने वालिदैन के साथ वक़्त गुजारना चाहते हैं और न ही अपने दोस्त–ओ–अहबाब के साथ आउटडोर गेम खेलना पसंद करते हैं, न ये स्कूल–व–मदरसा के वक़्त उठना चाहते हैं और न ही उन्हें ट्यूशन और कोचिंग की कोई फिक्र होती है। ये तो बस अपनी आर्टीफिशियल दुनिया में गुम होते हैं, उन्हें बस अपने गेम के लेवल कम्प्लीट करने की फिक्र सता रही होती है।

और इन्ही लेवल्स को पार करते–करते अपनी जिंदगी के अस्ल मक़सद से इतनी दूर निकल जाते हैं कि लौटना मुहाल होता है।

अपने बच्चों से मोहब्बत करो लेकिन उन्हें हर चीज एक दायरे में रहकर करने दो, उन्हें किसी भी चीज में हद से तजावुज न करने दो, क्यूँकि एतदाल (Moderation) ही कामयाबी की कुंजी है। मशहूर फलसफी अरस्तू कहता हैरू "फजीलत दरअस्ल एतदाल में है, जैसा कि अकल उसकी रहनुमाई करे। "(Nicomachean Ethics, Book II) यही उसूल वीडियो गेम्स पर भी सादिक आता है। खेल अगर हद में हो तो फ्रेशनेश का जरिया होता है, मगर जब हद से गुजर जाए तो तबाही बन जाता है। और बच्चों की जिंदगियों को चट कर जाता है। जेहनी और जिस्मानी नुकसानातरू तहक़ीक़ात बताती हैं कि जो बच्चे रोजाना तीन घंटे से ज्यादा गेमिंग करते हैं, उनके दिमाग में "डोपामीन" का तवाजुन बिगड़ जाता है। ये वही मादा है जो

इंसान को खुशी देता है। जब यही तवाजुन मसनूई जराए से मिलने लगे, तो हक़ीकी जिंदगी बेरंग महसूस होने लगती है। आँखों की कमजोरी, नींद की कमी, जिस्मानी सुस्ती, और मिजाज में चिड़चिड़ापन कृ ये सब आम शिकायतें हैं। लेकिन अस्ल नुक़सान तवज्जो की बर्बादी है। बच्चे अब वो तवज्जो नहीं दे पाते जो मुताला, गौर–व–फिक्र या गुफ्तगू के लिए जरूरी है।

मशहूर फलसफी सुक्रात का कौल है: "The uneamined life is not worth living." (यानी वो जिंदगी जिसका जायजा न लिया जाए, जीने के क़ाबिल नहीं।) ये जुमला आज के डिजिटल दौर पर बिल्कुल फिट बैठता है। बच्चे अपनी जिंदगी, आदतें या वक़्त का हिसाब नहीं लेते– वो सिर्फ अगले "लेवल" के पीछे भागते हैं।

मशहूर फलसफी अरस्तू ने एक और जगह कहारू "एतदाल" (Moderation) हर चीज में लाजिम है।" (Ethics,Book IV) इस एतदाल का मतलब ये है कि न तो तफरीही मशीनरी से फरार इख़्तियार किया जाए, न इसमें डूब जाया जाए। वीडियो गेम्स का मसला ये है कि वो जेहन को "आसान कामयाबी" की आदत डाल देती हैं। ये एक आसान मगर झूठी जीत की दुनिया है जहाँ मेहनत के बगैर कामयाबी मिलती है, और यही सबसे ख़तरनाक बात है कृ क्यूँकि अस्ल दुनिया में मेहनत के बगैर कुछ नहीं मिलता।

नफ्सियाती असरात: गेमिंग के माहिरीन कहते हैं कि गेम्स में रिवॉर्ड सिस्टम इस तरह बनाया जाता है कि खिलाड़ी बार–बार वापसी पर मजबूर हो। बच्चे समझते हैं कि वो गेम को कंट्रोल कर रहे हैं, मगर हकीक़त ये है कि गेम उन्हें कंट्रोल कर रहा होता है। मार काट और गोलीबारी पर आधारित गेम्स (जैसे शूटिंग या लड़ाई के खेल) बच्चों के दिलों में अनजाने ही में झगड़ालू पन और अराजकता के बीज बो देते हैं। फिर वो अस्ल जिंदगी में भी "मेहनत" के बजाए "ताक़त" के जरिए मसाइल हल करने लगते हैं। और अपने साथ अपने परिवार और कभी उस से भी ज्यादा लोगों की तबाही का सबब बनते हैं।

बचाव के मोअस्सर तरीक़ेरू बच्चों को गेमिंग से मुकम्मल रोकना मुमकिन नहीं, लेकिन इसका नियंत्रित उपयोग मुमकिन है।

इसके लिए चंद सादा मगर **मोअस्सर इकदामात ये हैं:** वक़्त की हदरू रोजाना गेम के लिए मख़सूस वक़्त मुक़र्रर करें कृ एक घंटे से ज्यादा नहीं। तफरीहरू मुताला, खेल कूद या तख़लीक़ी सरगर्मियों को फरोग दें। **निगरानी:** वालिदैन को मालूम होना चाहिए कि बच्चा कौन सा गेम खेल रहा है और क्यों। और यह कि ये गेम बच्चे पर कैसा असर डाल सकता है।

गुफ्तगूरू बच्चों से मुकालमा करें– उनकी दिलचस्पियों को सुनें, और उन्हें हक़ीकी दुनिया की ख़ूबसूरती दिखाएँ।

रूहानी पहलू: इबादत, जिक्र या फितरत से ताल्लुक़ कृ ये सब जेहनी सुकून के अस्ल जराए हैं, न कि मसनूई स्क्रीन की चमक। **आखिरी बात:** वीडियो गेम कोई दुश्मन नहीं कृ लेकिन जब वो हद से बढ़ जाए, तो वो हमारे बच्चों के लिए दुश्मन जरूर बन जाते हैं। अरस्तू की "एतदाल की अख़लाक़ियात" और सुक्रात का "ख़ुद एहतिसाबी" का सबक़ आज पहले से कहीं ज्यादा जरूरी है। में अपने बच्चों को ये सिखाना होगारू ''खेल जिंदगी का हिस्सा हो सकता है, मगर जिंदगी नहीं।''

मुहम्मद शाहिद अली मिस्बाही

सेहत सलाह

स्तन कैंसर कोशिकाओं को एक घंटे से भी कम समय में नष्ट कर सकता है ये फार्मूला

(सदा ए बुलंद न्यूज) एक उल्लेखनीय वैज्ञानिक खोज में, शोधकर्ताओं ने पाया है कि मधुमक्खी का विष आक्रामक स्तन कैंसर कोशिकाओं को एक घंटे से भी कम समय में नष्ट कर सकता है। इस शक्तिशाली प्रभाव के पीछे मुख्य घटक मेलिटिन है, जो मधुमक्खी के विष में पाया जाने वाला एक प्राकृतिक यौगिक है जो कैंसर कोशिकाओं पर हमला करता है और स्वस्थ कोशिकाओं को नुकसान नहीं पहुँचाता।

ऑस्ट्रेलिया स्थित हैरी पर्किन्स इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल रिसर्च के वैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार के कैंसरों पर इस विष का परीक्षण किया, जिनमें ट्रिपल–नेगेटिव स्तन कैंसर भी शामिल है – जिसका इलाज सबसे कठिन है। 60 मिनट के भीतर, इस विष ने कैंसर कोशिका झिल्लियों को तोड़ दिया, उनकी वृद्धि को रोक दिया और बीमारी को फैलने से रोका।इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि शोधकर्ताओं ने मेलिटिन को कीमोथेरेपी दवाओं के साथ मिलाकर उपचार की प्रभावशीलता में उल्लेखनीय सुधार किया। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे प्राकृतिक कैंसर उपचारों की एक नई पीढ़ी का विकास हो सकता है जो प्रभावी और सुरक्षित दोनों हैं।

यह खोज साबित करती है कि प्रकृति के सबसे छोटे जीवों में से एक, मानवता के सबसे बड़े दुश्मनों में से एक को हराने का रहस्य छुपा सकता है। पृथ्वी पर जीवन के लिए पहले से ही महत्वपूर्ण मधुमक्खी, अब इसे बचाने में भी मदद कर सकती है।

सिंघाड़े का आटा सेहत की गारंटी

(सेहत ए सलाह –सदा ए बुलंद न्यूज (Water Chestnut Flour) सूखे सिंघाड़े को पीसकर बनाया जाता है, जो एक ग्लूटेन–मुक्त और पौष्टिक आटा है। इसका उपयोग व्रत और सामान्य दोनों तरह के व्यंजनों में किया जाता है, जैसे कढ़ी, पकौड़ी, पराठे और हलवा। यह ग्लूटेन से एलर्जी वाले लोगों और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोगों के लिए एक अच्छा विकल्प है क्योंकि यह फाइबर, आयरन और पोटेशियम से भरपूर होता है। आप सिंघाड़े के आटे से यह व्यंजन बना सकते हैं:

सिंघाड़े के आटे के फायदे:

ग्लूटेन–मुक्त: यह ग्लूटेन असहिष्णुता (gluten intolerance) वाले लोगों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है।

पोषक तत्वों से भरपूर: इसमें आयरन, कैल्शियम, जिंक और पोटेशियम जैसे महत्वपूर्ण खनिज होते हैं।

पाचन में सहायक: फाइबर की अच्छी मात्रा होने के कारण यह पाचन में सुधार करता है और कब्ज से बचाता है।

ऊर्जा का स्रोत:यह शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है और व्रत के दौरान शरीर को सक्रिय रखने में मदद करता है।

ठंडी तासीर: इसकी तासीर ठंडी होती है, जो पित्त और पेट की गर्मी में राहत दे सकती है।

सिंघाड़े के आटे का उपयोग

व्रत के व्यंजन: यह व्रत में खाया जाता है क्योंकि यह अनाज नहीं, बल्कि फल है। इसका उपयोग कढ़ी, हलवा, पूरी और पकौड़ी बनाने के लिए किया जाता है।

सामान्य व्यंजन: इसे सामान्य व्यंजनों में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इसका उपयोग गाढ़ा करने वाले एजेंट के रूप में या घोल बनाने के लिए किया जाता है। आप सिंघाड़े के आटे का उपयोग कई अलग–अलग व्यंजनों को बनाने के लिए कर सकते हैं।

सिंघाड़े के आटे के हलवे के कई फायदे हैं –

जिनमें ग्लूटेन–मुक्त होना, ऊर्जा प्रदान करना, पाचन में सुधार करना, वजन घटाने में मदद करना और प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना शामिल है। यह व्रत या उपवास के दौरान खाने के लिए एक अच्छा विकल्प है क्योंकि यह हल्का होता है और लंबे समय तक पेट भरा रखता है।

सिंघाड़े के आटे के हलवे के फायदे: ग्लूटेन–मुक्त : यह ग्लूटेन से एलर्जी वाले लोगों के लिए एक सुरक्षित और बढ़िया विकल्प है। **ऊर्जावान:** यह ऊर्जा से भरपूर होता है और व्रत के दौरान शरीर को सक्रिय रखने में मदद करता है। **पाचन में सहायक:** यह पाचन के लिए हल्का होता है और कब्ज जैसी समस्याओं को दूर करने में मदद कर सकता है। **वजन घटाने में मददगार:** इसमें फाइबर की मात्रा अधिक और सोडियम की मात्रा कम होती है, जो भूख को नियंत्रित करने और वजन घटाने में सहायता करता है। **प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करे:** इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन सी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाते हैं। **हड्डियां मजबूत करे:** यह हड्डियों के लिए भी फायदेमंद माना जाता है, जैसा कि एक यूट्यूब वीडियो में बताया गया है। **विभिन्न पोषक तत्वों से भरपूर:** इसमें पोटैशियम, मैग्नीशियम और आयोडीन जैसे कई आवश्यक पोषक तत्व होते हैं।

सिंघाड़े के फायदे जानकार हैरान रह जाएगे

(सेहत ए सलाह – सदा ए बुलंद न्यूज) सिंघाड़ा कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। यह पाचन को सुधारता है, रक्तचाप को नियंत्रित करता है और हृदय स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, सिंघाड़ा वजन घटाने, हड्डियों को मजबूत बनाने, त्वचा और बालों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद कर सकता है। पाचन में सुधार और वजन घटाने में सहायक।

फाइबर से भरपूर: सिंघाड़े में मौजूद प्राकृतिक फाइबर पाचन तंत्र को दुरुस्त रखता है, कब्ज से राहत दिलाता है और मल त्याग को आसान बनाता है।

वजन नियंत्रण: इसमें कैलोरी कम और फाइबर अधिक होता है, जो पेट को लंबे समय तक भरा हुआ महसूस कराता है, जिससे अधिक खाने की इच्छा कम होती है और वजन घटाने में मदद मिलती है।

हृदय और रक्तचाप

हृदय स्वास्थ्य : पोटैशियम से भरपूर होने के कारण यह रक्तचाप को नियंत्रित रखने में मदद करता है, जिससे हृदय रोगों का जोखिम कम होता है।

कोलेस्ट्रॉल: इसमें मौजूद फाइबर कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में भी मदद कर सकता है।

अन्य फायदे

ऊर्जा प्रदान करता है: सिंघाड़ा कार्बोहाइड्रेट का एक अच्छा स्रोत है, जो शरीर को लगातार ऊर्जा प्रदान करता है, इसलिए यह व्रत के दौरान भी फायदेमंद है।

हड्डियाँ और बाल: इसमें कैल्शियम, मैग्नीशियम और फॉस्फोरस जैसे खनिज होते हैं, जो हड्डियों, दांतों और बालों को मजबूत बनाते हैं।

इम्यूनिटी बढ़ाता है: विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होने के कारण यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और सामान्य बीमारियों से बचाता है।

थायरॉइड के लिए : आयोडीन का अच्छा स्रोत होने के कारण यह थायरॉइड ग्रंथि के कार्य को सही रखने में मदद करता है।

त्वचा के लिए: विटामिन ई और एंटीऑक्सीडेंट त्वचा को स्वस्थ, चमकदार बनाते हैं और झुर्रियों को कम करने में मदद कर सकते हैं।

यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्शन :यह यूटीआई से बचाव और राहत दिलाने में भी मदद कर सकता है।

कैथा आपके स्वस्थ का साथी बन सकता है

(सेहत ए सलाह –सदा ए बुलंद न्यूज) एक फल है जो बेल जैसा होता है। इसे कठबेल भी कहते हैं। आयुर्वेद में कैथ को पेट रोगों का विशेषज्ञ माना गया है। इसका जहाँ शर्बत इस्तेमाल किया जाता है, वहीं चटनी भी खूब पसंद की जाती है। भारत में कैथ दक्षिण भारत से लेकर उत्तर भारत में पाया जाता है। इसके अलावा यह बांग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका, जावा, मलेशिया आदि में भी पाया जाता है। मोटे तौर पर कैथ को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

पहले वर्ग में छोटे आकार के कैथ फल होते हैं जो स्वाद में बहुत खट्टे होते हैं साथ ही गले पर भी असर करते हैं। दूसरे वर्ग में वह कैथ है जो आकार में बड़ा होता है। इसका गूदा खट्टापन लिए मीठा होता है। इसके फल कच्चे रहने पर हल्का हरा रंग लिए होते हैं जबकि पकने पर सफेद रंग के हो जाते हैं। इसके फलों का डंठल कड़ा होता है इसलिए यह आसानी से टूटता नहीं है तथा पकने पर स्वयं ही टूट कर गिर जाता है । इसके फल बसंत ऋतु में पकते हैं तथा पके हुए फल की सुगंध पेड़ के चारों ओर फैल जाती है।

कैथा को पेड़ से तोड़ने के बाद धूप में सूखाने के लिए इसकी कटाई की जाती है। इसका स्वाद खट्टा–मीठा होता है। कैथा ज्यादा पक जाने पर इसका स्वाद मीठा लगता है जिसे फल के रूप में भी खा सकते हैं। इस फल की ऊपरी परत काफी कठोर होती है। इसे सामान्य भाषा में गिर कहा जाता है। इसके अंदर का हिस्सा मुलायम होता है। इसके बाद गिर की सफाई करके उसे धूप में सुखाया जाता है। और बाद में मंडियों में इसे बेचा जाता है।कैथा देश में बहुत कम मात्रा में पाया जाता है, मगर मालवा में इसके अधिक पेड़ पाए जाते हैं।कैथा का सर्वाधिक उपयोग औषधीय दवाइयां बनाने में किया जाता है। इसे खाने से मधुमेह, हृदय रोग जैसी समस्याओं से निजात मिलता है और पाचन तंत्र के लिए यह बहुत उपयोगी माना जाता है। मालवा क्षेत्र और आगर मालवा में इस समय मैदानी इलाकों में कैथा के बहुत सारे दिखाई देते हैं।

कैथा के कई औषधीय गुण हैं जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हो सकते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख औषधीय गुण हैं:

1.पाचन तंत्र के लिए लाभकारी: कैथा का सेवन पाचन तंत्र को मजबूत बनाने में मदद कर सकता है।

2.मधुमेह को नियंत्रित करने में मदद: कैथा के सेवन से रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है।

3.हृदय रोगों से बचाव: कैथा में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और फाइबर हृदय रोगों से बचाव में मदद कर सकते हैं।

4.वजन कम करने में मदद: कैथा का सेवन वजन कम करने में मदद कर सकता है क्योंकि इसमें फाइबर की मात्रा अधिक होती है।

5. प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में मदद: कैथा में मौजूद विटामिन सी और अन्य एंटीऑक्सीडेंट प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में मदद कर सकते हैं।

6.कैंसर से बचाव में मदद: कैथा में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और अन्य पोषक तत्व कैंसर से बचाव में मदद कर सकते हैं।

7. त्वचा और बालों के लिए: लाभकारीरू कैथा का सेवन त्वचा और बालों के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हो सकता है।

कैथा का सेवन सीमित मात्रा में करना चाहिए।

प्रेग्नेंसी में सिंघाड़े खाने के फायदे

(सेहत ए सलाह –सदा ए बुलंद न्यूज) प्रेगनेंसी में सिंघाड़ा खाने से माँ और शिशु दोनों को कई फायदे होते हैं। यह एनर्जी बूस्ट करता है, गर्भपात का खतरा कम कर सकता है, और शिशु के विकास में मदद कर सकता है। सिंघाड़े में पाए जाने वाले विटामिन, आयोडीन, मैंगनीज, और फाइबर जैसे पोषक तत्व हार्मोनल स्वास्थ्य, पाचन और समग्र स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हैं, साथ ही यह थायराइड और डायबिटीज जैसी बीमारियों से भी बचाने में मदद कर सकता है।

गर्भवती महिलाओं के लिए सिंघाड़ा खाने के फायदे:

ऊर्जा प्रदान करता है : सिंघाड़ा ऊर्जा का एक अच्छा स्रोत है, जो गर्भावस्था के दौरान थकान को कम करने में मदद करता है।

गर्भपात का खतरा कम करता है: कुछ शोधों के अनुसार, सिंघाड़े का सेवन गर्भपात के जोखिम को कम कर सकता है।

शिशु के विकास में सहायक: यह शिशु के बेहतर विकास और स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हो सकता है, क्योंकि यह उन्हें ऊर्जा देता है।

बीमारियों से बचाव: यह थायराइड, ल्यूकोरिया और डायबिटीज जैसी बीमारियों से बचाने में मदद कर सकता है।

पाचन में सुधार: इसमें मौजूद फाइबर पाचन तंत्र को दुरुस्त रखता है और कब्ज जैसी समस्याओं को दूर करने में मदद करता है।

हार्मोनल स्वास्थ्य को बढ़ावा: सिंघाड़ा आयोडीन और मैंगनीज से भरपूर होता है, जो हार्मोनल स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं।

त्वचा और बालों के लिए फायदेमंद: यह गर्भावस्था के दौरान होने वाली त्वचा और बालों की समस्याओं को दूर करने में भी मदद कर सकता है।

बेहतर नींद: नींद न आने की समस्या से जूझ रही महिलाओं के लिए भी यह फायदेमंद हो सकता है।

सिंघाड़ा खाने से कौन सी बीमारी दूर होती है? सिंघाड़े में फाइबर की मात्रा ज्यादा होती है जो पाचन को दुरुस्त करती है। इसका सेवन करने से अपच से राहत मिलती है और पाचन दुरुस्त रहता है। ये एक ऐसा फल है जो आंतों की बीमारियों को दूर करता है और आंतों को साफ करता है। पेट की गंदगी को दूर करने में ये फल बेहद असरदार साबित होता है।

सिंघाड़े के स्वास्थ्य लाभ

- शीतलक के रूप में कार्य करता है।
- पीलिया ठीक करता है।
- एंटी ओक्सिडेंट गुण हैं।
- मूत्र संक्रमण का इलाज करता है।
- अपच और मितली को ठीक करता है।
- खांसी से राहत दिलाता है।
- बालों के लिये फायमेंद है।
- रक्त में सुधार करता है।
- उच्च रक्तचाप से निपटने में मदद करता है।

1,500 Palestinians are seriously injured in the war and are in dire need of medical treatment,but cowardly Israel has closed all aid lines.

(World news - Sada e buland News)The World Health Organization says 15,000 Palestinians, desperately in need of medical treatment, are awaiting medical evacuation from Gaza, as the Rafah border crossing remains shut despite the ceasefire deal.US Vice President JD Vance told reporters that the US's policy remains that Israel will not annex the occupied West Bank, calling parliamentary vote in favor of annexation a "very stupid political stunt".The International Court of Justice rules Israel has an obligation as the occupying power to allow basic necessities into war-ravaged Gaza, saying it's using "starvation as a method of warfare".Israel's war on Gaza has killed at least 68,234 people and wounded 170,373 since October 2023. A total of 1,139 people were killed in Israel during the October 7, 2023 attacks and about 200 were taken captive Body of Thai migrant held in Gaza repatriated to ThailandThe body of Thai farm labourer, Sonthaya Oakkharasri, who was killed during the October 7, 2023 attack on Israel and held by Hamas in Gaza has been repatriated to Thailand, officials said.

His remains arrived at Bangkok's Suvarnabhumi Airport from Tel Aviv as part of the ceasefire deal. Israeli authorities confirmed this week they had received Sonthaya's body and formally identified him.Sonthaya was 30 years old and worked at the Beeri kibbutz. His mother told local media she was devastated but grateful that her son's body would return to his hometown in northern Nong Bua Lamphu province.His body will be sent for funeral rites according to Buddhist tradition, and the Thai government will provide compensation of up to $54,000 to his family, local outlet Thairath said.Nearly 30,000 Thais work in Israel, according to Thailand's labour ministry, mostly in the agricultural sector. The Thai foreign ministry told the AFP news agency that 47 Thai nationals have been killed in the two-year war.

Under the truce, Hamas has returned the final 20 surviving captives it was holding and so far released 15 of another 28 who died.Two killed in Israeli drone attack in LebanonThe Lebanese Health Ministry says an Israeli drone strike that targeted a car on the Zebdine road in the Nabatieh district of southern Lebanon has killed two people and wounded one.Israel has repeatedly attacked targets in Lebanon in recent months, despite agreeing a ceasefire with Hezbollah in November 2024.

'Not in our name': Jewish figures urge world leaders to protect ceasefire, investigate genocide, end Israeli occupationA number of Jewish and Israeli figures have penned an open letter to world leaders, urging them to protect the ceasefire, push for accountability for the crimes committed by Israel – including genocide – and bring an end to Israel's "occupation and apartheid".“There should be no doubt that this ceasefire is fragile: Israeli forces remain in Gaza, the agreement makes no reference to the West Bank, the underlying conditions of occupation, apartheid, and the denial of Palestinian rights remain unaddressed," the letter states.

"We bow our heads in immeasurable sorrow as the evidence accumulates that Israel's actions will be judged to have met the legal definition of genocide. Attempts are already underway to deny accountability and reassert the same broken playbook of impunity. That cannot pass," it also stated.The letter continued, calling it an appeal from Jews of "all walks of life": "We have not forgotten that so many of the laws, charters, and conventions established to safeguard and protect all human life were created in response to the Holocaust."

One wanted accused was arrested with a 315 bore pistol and two live cartridges.

(Shahjahanpur -Sada e buland News)On the basis of the application from the plaintiff, Kamal Kashyap, son of Shri Mahendra Pal, resident of Mo. Bijlipura, Kotwali Police Station, Shahjahanpur district, under the leadership of Kotwali Police Station, FIR No. 438/2025 was registered under sections 191(2)/191(3)/333/352/115(2)/109(1)/351 (3) I.N.S. on 17.10.2025. Regarding the accused 1. Sonu Gupta son of late Ramesh Chandra Gupta 2. Kunal Gupta son of Praveen Gupta 3. Lalu son of unknown resident of Mohalla Bijlipura 4. Five unknown people, a case has been registered against the plaintiff's brother Vishal for dragging him out of the house, abusing him, beating him, firing with the intention to kill him and threatening to kill him, in which the accused Sonu Gupta son of late Ramesh Chandra Gupta resident of Mohalla Bijlipura near Hanuman Mandir, Kotwali police station, Shahjahanpur district, age about 33 years, was wanted. On 23.10.2025, based on information from an informer, the Kotwali police team arrested the wanted accused Sonu Gupta, son of late Rameshchandra Gupta, resident of Bijlipura near Hanuman Temple, Kotwali police station, Shahjahanpur, aged about 33 years, with a 315 bore pistol and two live cartridges at 00.20 hrs from the New Bridge side, 50 paces ahead of Gate No. 2 of Hanuman Dham. Based on the recovery, sections 3/25/27 of the Arms Act were added to the above case.Details of the arrested accused:- Sonu Gupta, son of late Rameshchandra Gupta, resident of Bijlipura near Hanuman Temple, Kotwali police station, Shahjahanpur, aged about 33 years.

सदा–ए– बुलंद टीम समाजिक बुराईयां पर प्रहार करने के लिये हर विभाग में अख़बार पहुँचा रही है।

सदा ए बुलंद अखबार एजेंसी की पूरी टीम ने सभी थानों चौकी में दरोगाओं एस. आई. से मुलाकात की जनता और प्रशासन की सहुलियतों के लिए नियम कानून प्रशासन और समाजिक गतिविधियों पर चर्चा की

टीम पत्रकारगण:

1– (ओनर प्रधान संपादक)–
शेख़ बहार ए आलम कादरी रिज़वी
2– (सलाहकार)डॉ इरफान ह्यूमन
3– क़दीर ख़ान
4– मो.रेहान
5– खालिद खान
6– रेहान ख़ान
7– कामरान अली
8– जोया खान
9–काशिफ ख़ान
10– नईम अंसारी
11– इस्तिखार बेग

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं प्रधान सम्पादक

बहार मोहम्मद

द्वारा लव–कुश प्रिंटर्स, बाड़ूजई पेशावरी (आदर्श नगर कालोनी) शाहजहांपुर–242001 से मुद्रित एवं 2, नियर पक्का तालाब बरादरी जिला शाहजहांपुर (उ.प्र.) 242001 से प्रकाशित एवं वितरित प्रधान सम्पादक **बहार मोहम्मद**

मो0 नम्बर 9565100392–9453556135

sadaebulandmgzn@gmail-com

नोट- समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र शाहजहाँपुर (उ.प्र.) होगा।